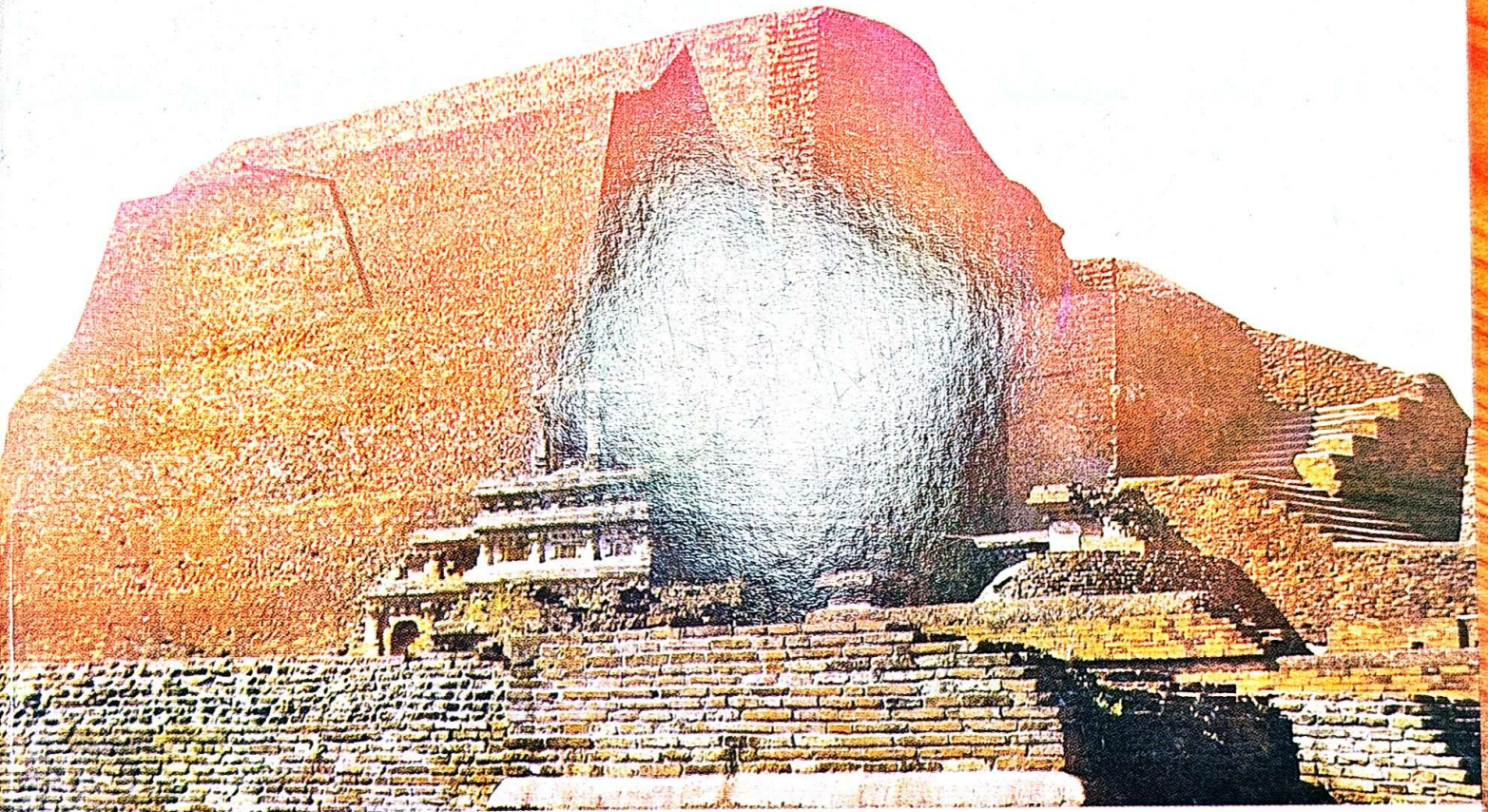




चेतना

सत्रहवाँ अंक

जून 2005



महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
बिहार, पटना

चेतना परिवार



बैठे हुए हैं बायें से पत्रिका के परामर्शी श्री अवधेश कुमार श्रीवास्तव, उपमहालेखाकार, श्री उदय शंकर प्रसाद, उपमहालेखाकार, संरक्षक माननीय महालेखाकार श्री राकेश कुमार वर्मा तथा परामर्शी श्री आनन्द मोहन बजाज, वरिष्ठ उपमहालेखाकार ।

खड़े हैं बायें से श्री अजीत कुमार सिन्हा, सहायक लेखा अधिकारी, सम्पादक श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर' एवं प्रधान सम्पादक श्री अवधेश कुमार, लेखा अधिकारी ।



सत्यमेव जयते

चेतना

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका
सत्रहवाँ अंक

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना का कार्यालय
महालेखाकार भवन

वीरचन्द पटेल पथ, पटना- 800 001

स्वत्वाधिकार : महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) बिहार, पटना।

प्रकाशन : 'चेतना'

प्रकाशक : महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) बिहार, पटना का कार्यालय
महालेखाकार भवन, वीरचन्द पटेल पथ
पटना- 800 001

अंक : सत्रहवाँ
(जून, 2005)

मूल्य : राजभाषा हिन्दी की निरन्तर सेवा

मुख्य पृष्ठ आवरण परिचय

पटना से 90 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित
सुविख्यात ऐतिहासिक नालन्दा विश्वविद्यालय का खंडहर ।

मुद्रक : आस्था एडभर्टाइजर
डी-72, पी.सी. कॉलोनी,
कंकड़बाग, पटना-20
दूरभाष : 9835430297

चेतना

चेतना परिवार

संरक्षक :

श्री राकेश कुमार वर्मा

महालेखाकार (ले० एवं ह०) बिहार, पटना



प्रकाशन परामर्शदातृ समिति :



श्री आनन्द मोहन बजाज

वरिष्ठ उपमहालेखाकार, बिहार, पटना



श्री उदय शंकर प्रसाद

उपमहालेखाकार, बिहार, पटना



श्री अवधेश कुमार श्रीवास्तव

उपमहालेखाकार, बिहार, पटना



प्रधान सम्पादक :

श्री अवधेश कुमार

लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष



सम्पादक :

श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर'

अनु. अधि., हिन्दी कक्ष

चेतना

अनुक्रमणिका

क्रम सं०	विषय	रचनाएँ	लेखक	पृष्ठ सं०
1.	चेतना परिवार			
2.	अनुक्रमणिका			
3.	महालेखाकार का संदेश			
4.	व० उपमहालेखाकार का संदेश			5
5.	उपमहालेखाकार का संदेश			6
6.	सम्पादकीय			7
7.	आपके पत्र			9
8.	विभाग ने याद किया	कविता	श्री रघुनाथ प्रसाद	11
9.	समय	कहानी	श्री मनमीत कुमार	20
10.	उलझन	कविता	श्री त्रिलोचन कुमार घोष	22
11.	राष्ट्र निर्माण में साहित्य	निबंध	श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर'	27
12.	नशाबंदी	कविता	श्री वशिष्ठ कुमार हेम्बरम	28
13.	दहेज प्रथा	कविता	सुश्री गरिमा सिन्हा	32
14.	सिंहस्थ कुम्भ -उज्जैन	यात्रा वृत्तान्त	श्री राम सुभग राम	33
15.	तुम	कविता	श्री कृष्ण मुरारी जयपुरियार	34
16.	स्वामी विवेकानन्द और उनके सपनों का भारत	लेख	श्री राजू कुमार सिंह	38
17.	कल, आज और कल	कविता	श्री लतेश कुमार	40
18.	बिहार की पहचान	संस्मरण	श्री हरे राम प्रधान	52
19.	इन्साफ यहाँ पर रोता है	कविता	श्री रामाधार राय	54
20.	यात्रा वृत्तान्त	संस्मरण	श्री शिव दयाल सिंह	57

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रचनाकारों के निजी विचार हैं। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं जिम्मेवार हैं। रचनाओं में व्यक्त विचारों से महालेखाकार कार्यालय का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

❖ प्रधान सम्पादक

चेतना



सत्यमेव जयते

महालेखाकार (ले० एवं ह०) बिहार, पटना का

संदेश

मुझे यह जानकर अतिशय हर्ष हो रहा है कि राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं उसके प्रगामी प्रयोग में श्रीवृद्धि के उद्देश्य से इस कार्यालय के द्वारा हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के सत्रहवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। आशा है, यह अंक भी अन्य अंकों की तरह प्रभावोत्पादक एवं सारगर्भित होगा।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका के प्रकाशन से न केवल हिन्दी के विकास में अभिनव आयाम जुड़ेगा, बल्कि इस कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने विचारों की अभिव्यक्ति तथा राष्ट्रभाषा की सेवा का सुअवसर भी उपलब्ध होगा।

पत्रिका के इस अंक के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ !

राकेश कुमार वर्मा
महालेखाकार



सत्यमेव जयते

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (लेखा एवं भी० एल० सी०)
बिहार, पटना का

संदेश

मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि पाठकों के कर-कमलों में 'चेतना' पत्रिका के सत्रहवें अंक को शीघ्र समर्पित किया जा रहा है। इसके प्रकाशन पर हार्दिक बधाई।

इस पत्रिका ने राजभाषा हिन्दी के प्रति सदा सहृदय पाठकों की चेतना जगायी है। आशा है, यह पत्रिका हिन्दी के विकास में सहायक सिद्ध होगी। मैं पत्रिका के सम्पादक मंडल, रचनाकारों एवं प्रकाशन से जुड़े लोगों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ तथा पत्रिका की दिनानुदिन प्रगति की कामना करता हूँ।

आनन्द मोहन बजाज

व० उपमहालेखाकार
(लेखा एवं भी० एल० सी०)



सत्यमेव जयते

उपमहालेखाकार (प्रशा/पेन) बिहार, पटना का

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का सत्रहवाँ अंक जल्द ही प्रकाशित होने जा रहा है। इस पत्रिका ने कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की हिन्दी के प्रति सदैव अभिरुचि बढ़ाने में प्रशंसनीय कार्य किया है। पत्रिका के सफलता हेतु समस्त रचनाकार एवं सम्पादक मंडल को बधाई देता हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना करता हूँ।

उदय शंकर प्रसाद

उपमहालेखाकार (प्रशा/पेन)

बिहार पटना।



सत्यमेव जयते

उपमहालेखाकार (जी० ई०/निधि) बिहार, पटना का

संदेश

हर्ष की बात है कि कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का सत्रहवाँ अंक प्रकाशित होने जा रहा है। इस पत्रिका ने हिन्दी के प्रति पाठकों का सदा रुझान बढ़ाया है। इस हेतु पत्रिका के सम्पादकों एवं रचनाकारों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। इस पत्रिका की सतत प्रगति होती रहे, यही मेरी शुभकामना है।

अवधेश कुमार श्रीवास्तव

उपमहालेखाकार (जी० ई०/निधि)

बिहार, पटना।

मुझे सहृदय एवं सुधी पाठकों के समक्ष इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के सत्रहवें अंक को प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष हो रहा है।

राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी हमारे देश के गौरव एवं आन-बान-शान का द्योतक हैं। इसका स्वस्थ प्रचार-प्रसार हम सबों की संवैधानिक एवं नैतिक जवाबदेही है। हिन्दी केवल एक भाषा के रूप में आदृत नहीं हैं, बल्कि यह हमारे बीच परस्पर प्रेम, सद्भाव, एकता एवं अभिव्यक्ति का जीवंत एवं सशक्त माध्यम भी है।

अतः आप सबों से सादर अनुरोध है कि हिन्दी को निज भाषा समझकर लिखना पढ़ना-बोलना प्रारंभ कर दीजिए, तन्मयता से कार्यालय का अधिकाधिक कार्य हिन्दी में ही कीजिए, बल्कि समस्त कार्यालयीय कार्य सिर्फ हिन्दी में करने का प्रयास कीजिए। थोड़े ही दिनों में आपको स्वयं अहसास होने लगेगा कि हिन्दी भाषा कितनी सहज, सरल, सुगम, सुबोध एवं सुखद है।

हिन्दी पत्रिका 'चेतना' इसी दिशा में एक प्रयास है। यह पत्रिका इस कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की

बौद्धिक प्रतिभा का, सृजनात्मक मेधा का प्रकाशन है। हमारा यह पुनीत कर्तव्य होता है कि हम सभी मिलकर इसे ज्यादा-से-ज्यादा प्रभावोत्पादक बनाने का प्रयास करें। हमारे पर अच्छी-अच्छी रचनाएँ देकर पत्रिका का ससमय प्रकाशन कराने में सहायता प्रदान करें तथा राजभाषा हिन्दी के मान-सम्मान में चार चाँद लगाकर राष्ट्र की सेवा करें।

हिन्दी के प्रेमी एवं पत्रिका के संरक्षक माननीय महालेखाकार श्री राकेश कुमार वर्मा एवं परामर्शदातृ समिति के सभी सदस्यों के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ जिनका अटूट प्रेम एवं अपार स्नेह इस पत्रिका को मिलता रहा। उनके मार्ग-दर्शन में पत्रिका पुष्पित-पल्लवित होती रही। पत्रिका के सफल चित्रण एवं प्रकाशन के लिए मैं श्री अजित कुमार सिन्हा, सहायक लेखा अधिकारी, जी० डी० अनुभाग को साधुवाद देता हूँ।

अंत में, पाठकों से सादर अनुरोध है कि उन्हें यह पत्रिका कैसी लगी, कृपया अपने विचारों से हमें अवगत कराने का कष्ट करेंगे, साथ ही पत्रिका को और रोचक एवं ज्ञानवर्धक बनाने में अपने सुझावों से भी हमें अनुप्रेरित करने की कृपा करेंगे।

जय भारत, जय हिन्दी !



आपके पत्र

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के सोलहवें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट 'ठोकर', 'जागरण दिवस', 'अतीत', 'नरसंहार' एवं 'नशे से सावधान' सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक रचनाएँ हैं। आपकी पत्रिका हिन्दी की प्रगामी प्रगति के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगी। पत्रिका मंडली की सृजनात्मक प्रतिभा हेतु बधाई एवं हिन्दी के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ!

चेन्नई

14.12.2004

हिन्दी अधिकारी

प्रधान महालेखाकार

(सिविल लेखा परीक्षा)

तमिलनाडु एवं पांडिचेरी का कार्यालय।



आपके पत्र

आपके द्वारा प्रेषित 'चेतना' के 16 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सार्थक सामग्री के चयन हेतु बधाई। पत्रिका की रूप सज्जा तथा रचनाएँ राजभाषा हिन्दी के प्रति आपकी सक्रियता एवं निष्ठा की परिचायक है। अंक का मुख पृष्ठ अत्यधिक सुन्दर व आकर्षक है। रचनाओं में अनेक रचनाएँ सार्थक और पठनीय हैं, किन्तु श्री मनमीत कुमार की कहानी 'ठोकर', श्री नरेन्द्र कुमार सिंह 'नाहर' की कविता 'जागरण दिवस' एवं श्री शिव दयाल सिंह का संस्मरण विशेष सराहनीय हैं।

पत्रिका के भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ!

ग्वालियर

17.12.2004

प्रधान सम्पादक

"वीरांगना"

महालेखाकार (ले० एवं ह०) द्वितीय
मध्य प्रदेश, ग्वालियर का कार्यालय।



आपके पत्र

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के सोलहवें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। इसके लिए धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित लेख, कविता, कहानी, संस्मरण, निबंध एवं कहानी पठनीय, रोचक तथा सराहनीय है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सम्पादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यही हमारी शुभकामना है।

गन्तोक

21.12.2004

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

(प्रशासन)

कार्यालय, वरिष्ठ उप महालेखाकार

(ले० एवं ह०)

सिविकम, गन्तोक।



आपके पत्र

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित 'चेतना' पत्रिका के सोलहवें अंक की प्राप्ति पर अति प्रसन्नता हुई। एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका में छपे सभी लेख अति सुन्दर, भावप्रद, पठनीय एवं संग्रहणीय हैं। पत्रिका के सुन्दर संयोजन एवं सम्पादन हेतु सम्पादक मंडल को बधाई तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ!

नई दिल्ली

27.12.2004

लेखा परीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा,
केन्द्रीय राजस्व, नई दिल्ली।



आपके पत्र

‘चेतना’ के सोलहवें अंक की प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का मुख पृष्ठ आकर्षक है। इसमें संकलित सभी रचनाएँ पठनीय एवं रोचक हैं। तथापि श्री नरेन्द्र सिंह ‘नाहर’ की कविता ‘जागरण दिवस’ एवं सुश्री अदिति की कविता ‘गरीबी हटाओ’ प्रशंसनीय है। श्री हरेराम प्रधान का लेख ‘बढ़ती जनसंख्या -समस्या एवं निदान’ सार्थक लेख है। श्री मुरारी जयपुरियार की कथा ‘सिस्टर सरला’ एक नर्स की सेवा एवं त्याग भावना की बेमिसाल घटना है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ!

ग्वालियर

23.12.2004

सहायक लेखा अधिकारी (राजभाषा),

प्रधान संपादक ‘दर्पण’

महालेखाकार (ले० एवं ह०) प्रथम,

मध्य प्रदेश

ग्वालियर का कार्यालय।



आपके पत्र

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का सोलहवाँ अंक प्राप्त हुआ। इस अंक में संकलित सभी रचनाएँ स्तरीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। श्री हरेराम प्रधान का लेख 'बढ़ती जनसंख्या - समस्या एवं निदान' इस समस्या के प्रति हमें जागरूक बनाने का प्रयास करता है। इसके अतिरिक्त श्री दिलीप कुमार सिंह का लेख 'ज्ञान मोक्षप्रद वेद बरवाना' महापुरुषों के अनमोल वचनों से परिचित करवाता है। साथ ही इस अंक की कविताएँ भी बहुत पसंद आई।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामना के साथ।

चण्डीगढ़

23.12.2004

उपमहालेखाकार

महालेखाकार (ले० एवं ह०) पंजाब
चण्डीगढ़ का कार्यालय।



आपके पत्र

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का सोलहवाँ अंक पाकर अत्यंत प्रसन्नता हुई।

पत्रिका के इस अंक में लिखे गए लेख, कहानी तथा कविताएँ बहुत ही श्रमपूर्वक लिखी गई प्रतीत होती हैं। पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के दृष्टिकोण से सराहनीय है। श्री रमा प्रसाद चक्रवर्ती द्वारा रचित लेख 'किसमस' मानव जीवन में परिवर्तन का संदेश देता है। इसके अलावा बाकी सभी सामग्री अच्छी है।

पत्रिका की निरन्तर प्रगति के लिए इस कार्यालय की तरफ से शुभकामनाएँ।

महाराष्ट्र

31.12.2004

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा)

महालेखाकार (ले० एवं ह०)

I महाराष्ट्र का कार्यालय।



आपके पत्र

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका 'चेतना' का 16 वाँ अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए धन्यवाद।

पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ सुपाठ्य एवं ज्ञानवर्धक हैं। खासकर श्री मनमीत कुमार की कहानी 'ठोकर' ने मन को छू लिया। श्री रमा प्रसाद चक्रवर्ती का 'किसमस' अतिसुन्दर है। श्री चन्द्रिका सिंह का 'नशे से सावधान' नशे के पदार्थ के बारे में उपयोगी जानकारी देता है।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

बेंगलूर

10.01.2005

हिन्दी अधिकारी

महालेखाकार (ले० एवं ह०) कर्नाटक
बेंगलूर का कार्यालय।



आपके पत्र

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के सोलहवें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद।

यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ अच्छी हैं, तथापि श्री दिलीप कुमार सिंह का लेख ज्ञान 'मोक्षप्रद वेद बरवाना', श्री कृष्ण मुरारी जयपुरियार की कथा 'सिस्टर सरला' और श्री मनोज कुमार की कविता 'चुनावी साल' हमें ज्यादा अच्छी लगीं।

पत्रिका की अविरल प्रगति की शुभकामना।

कोलकाता

18.01.2005

सहायक लेखा अधिकारी,
हिन्दी सेल,
प्रधान महालेखाकार (ले० एवं ह०),
पश्चिम बंगाल,
कोलकाता का कार्यालय।



विभाग ने याद किया

श्री रघुनाथ प्रसाद
से० नि० वरिष्ठ उपमहालेखाकार

पेड़ की डाली से बिखरा हुआ पत्ता
न जाने बिछुड़ कर कहाँ चला जाता है ?
पेड़ को उस बिखरे हुये पत्ते के
अस्तित्व का कुछ पता नहीं होता,
किन्तु धूल भरे कर्णों में लिपटा हुआ
वह पत्ता अपनी पुरानी गरिमा को

नहीं भूलता जब,

वह पेड़ की शाख पर इठलाता
पेड़ की शोभा बढ़ा, उसके फलने -फूलने,
भोजन उगाही के लिए आवश्यक था
भले ही उस सूखे पत्ते की सद्गति
सड़कर पादपों को

जीवन देना या फिर

जलकर जीवों को आतप रखना होता।
विभाग से निवृत्त हुआ व्यक्ति
किस प्रकार अपने,

पैतृक विभाग को भूले,
कार्यों, कुशल, अकुशल कर्मों के प्रति,
विभाग का गर्व एवं अभिमान तो होता ही है,

इस आशय के साथ कि सूखे,
बिखरे पत्तों की जगह,
विभाग में जन्मी नयी कोपलें,
एक दिन फिर जवान होंगी,
विभाग की गरिमा बढ़ायेंगी।



समय

श्री मनमीत कुमार,
व०ले० अधिकारी

रात का गहरा सन्नाटा था। बोतल से पानी की बूँद-बूँद निकल कर स्नेहा की नसों में दौड़ रही थी। ऐसा लग रहा था मानों पानी की बूँदें अपने घर से निकल कर स्नेहा को जिन्दगी देने में लगी थीं। नर्सिंग होम के प्राइवेट वार्ड में बेड पर पड़ी स्नेहा की आँखें बंद थीं। पलकों में बंद आँसू की बूँदें कोर से टपक कर बाहर आने का निरर्थक प्रयास कर रही थीं। चेहरा शांत था। परन्तु फिर भी कांतिमय था। कमरे में उसके दो लड़के अमन और संजय भी मौजूद थे। दोनों की आँखों से आँसू की अविरल धारा बह रही थी।

स्नेहा अपने घर में सबसे बड़ी थी। पिताजी का अपना एक अच्छा-खासा बिजनेस था। पिता का नाम था प्रकाश। उन्हें दो लड़की तथा एक लड़का था। स्नेहा

उनकी बड़ी लड़की थी। पिता की लाडली थी। स्नेहा जो भी जिद करती उसे पूरा करने हेतु प्रकाश बाबू हमेशा तत्पर रहते थे। स्नेहा की जिद पूरी करना प्रकाश बाबू का नशा बन गया था। ऐसा नहीं था कि प्रकाश बाबू अन्य बच्चों से प्यार नहीं करते थे। मगर स्नेहा की बात कुछ और थी।

एक बार प्रकाश बाबू को बिजनेस में काफी घाटा लगा। वे काफी परेशान थे। शाम में वे घर थके मन से लौटे ही थे कि तभी एक आवाज आयी-

“पापा”

“क्या बेटा”-प्रकाश बाबू बोले

“पिक्चर चलना है”

“क्यों बेटा, आज ही”

“क्या, कोई परेशानी हैं?”

इसके बाद प्रकाश बाबू कुछ नहीं बोले । उन्होंने ड्राईवर को आवाज दी और उनकी गाड़ी परिवार को लेकर सड़क पर दौड़ रही थी। संक्षेप में प्रकाश बाबू की डिप्रेशन की दवा स्नेहा थी। स्नेहा के कहे गये “पापा” शब्द से उन्हें बड़ा ही प्यार था।

समय की गाड़ी दौड़ रही थी। स्नेहा को स्नेह देने में प्रकाश बाबू समझ ही नहीं पाये कि स्नेहा कब बड़ी हो गयी।

जब उनके एक दोस्त ने स्नेहा की शादी की चर्चा की, तब उन्हें अहसास हुआ कि स्नेहा बड़ी हो गयी है। जिस पौधे को उन्होंने प्यार से गले लगा रखा था, उसे विदा करने का वक्त आ गया था। वे सोचने लगे कि भगवान बेटियाँ क्यों देते हैं। देते हैं तो फिर विदाई क्यों? उन्हें समय पर गुस्सा आ रहा था। क्यों उन्हें इतनी जल्दी समय इस पथ पर ले आया। परन्तु, समाज की स्थापित नीति के कारण स्नेहा की शादी करनी ही थी। देखने में अच्छी थी स्नेहा। घर में माहौल बदलने लगा था। अच्छे- खराब

रिश्तों पर चर्चा होने लगी। अच्छे-अच्छे लड़कों का पता आने लगा। अच्छे रिश्ते के लिए प्रकाश बाबू ने चारों दिशाओं में दौड़ना शुरू कर दिया। समाज के सबसे बड़े यज्ञ को उन्हें अंजाम देना था। और आखिर वो दिन आ ही गया। स्नेहा की शादी ठीक हो गयी। मालूम हुआ कि लड़का केन्द्र सरकार में अच्छे पद पर कार्यरत है। चारों ओर से उन्हें बधाई मिलने लगी। मगर स्नेहा- गुमशुम सी रहने लगी। प्रकाश बाबू की आँखों में भी दर्द देखा जा सकता था। वे चाहते थे कि स्नेहा कुछ उनसे मांगे, कुछ पाने की जिद करे। मगर स्नेहा एकदम शांत रहने लगी। उसका दिलो-दिमाग इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं हो रहा था कि उसे यह घर छोड़कर जाना है। अपने ही घर से उसे पराया किया जायेगा।

एक रात प्रकाश साहब सोये हुए थे। स्नेहा चुपचाप उनके पलंग के पास खड़ी हो गयी। उसकी आँखें रोते-रोते लाल हो चुकी थीं। उसने पुकारा -

“पापा, पापा”।

प्रकाश बाबू की आँखें खुलीं तो स्नेहा को खड़ा पाया। उन्होंने पूछा—

“क्या बात है बेटा” ?

“मुझे शादी नहीं करनी ”

‘क्यों?’

मैं इस घर से नहीं जाऊँगी। मैं आपको परेशान भी नहीं करूँगी। बस मेरी शादी नहीं कीजिये। इसके बाद स्नेहा के सिर्फ रोने की आवाज और तेज से तेज होती चली गयी। प्रकाश बाबू की आँखें भर आयी। उसने अपनी स्नेहा को सीने से लगा बच्चों की तरह रोने लगे। उनका धैर्य आखिर जवाब दे चुका था। घर के अन्य सदस्य भी वहाँ आ गये। सभी रो रहे थे। आँसू की इस धारा में संबंधों की नींव मजबूत हो रही थी।

स्नेहा की शादी का समय आ गया। लगभग सभी रिश्तेदार आ गये थे। पूरे मुहल्ले का चौका-चूल्हा चार दिनों से बंद था। सभी लोगों के दिन-रात का खाना-पीना प्रकाश साहब के घर पर ही

होता था। शादी का पकवान शुद्ध घी में बनने का आदेश था। उल्लास के माहौल में स्नेहा की शादी कर दी गयी।

स्नेहा अपनी ससुराल पहुँची। ससुराल का कुछ अजीबो-गरीब माहौल था। ससुर उनके पूरे पीने वाले थे। सास के घर से, अपनी बहू से कुछ खास मतलब नहीं था। स्नेहा की दुनिया मात्र रसोई घर तक रह गयी थी। एक ननद थी जो ठीक थी। दो देवर थे मगर किसी काम के नहीं। स्नेहा के पति ने काफी प्यार दिखाया, तरह-तरह के सपने दिखाये। स्नेहा को एक छोटा-सा तथा प्यारा-सा घर का सपना दे दिया। कुल मिलाकर सब कुछ ठीक ही था। मगर धीरे-धीरे उसके पति के रवैये में परिवर्तन आने लगा। उसे सोने और चाय पीने के अलावा कोई काम नजर नहीं आता था। स्नेहा ने उसकी नौकरी के संबंध में कोई बात करनी चाही तो उसे टाल दिया गया।

एक दिन स्नेहा ने हिम्मत कर अपने पति से पूछा कि

“ आप काम पर कब जा रहे हैं ?

“ क्या तुम्हे मेरा यहाँ रहना पसंद नहीं ?”

“नहीं यह बात नहीं है। मैंने बस-----”

फिर स्नेहा ने नौकरी के संबंध में कभी नहीं पूछा। एक दिन इधर-उधर की बात कर उसके पति ने उसके सारे जेवर बेच डाले। एक दिन यह स्पष्ट हो गया कि वह कोई नौकरी नहीं कर रहा है। कालान्तर में स्नेहा को दो लड़के हो गये।

इधर प्रकाश बाबू को ये सारी बातें धीरे-धीरे मालूम हो गयी। अपनी बेटी की यह स्थिति उनसे देखी नहीं जा रही थी। वे बीमार रहने लगे। आखिर उन्हें हार्ट अटैक हो गया। वे दुनिया से चल बसे।

स्नेहा के अपने पति के साथ बिगड़ते संबंधों में प्रकाश बाबू की मौत ने आग में घी का काम किया और उस वक्त उसने एक

निर्णय लिया अपने पति को छोड़ने का।

वह अपनी ससुराल को छोड़ किराये के मकान में रहने लगी। मगर जिंदगी इतनी आसान नहीं थी। इस विपरीत परिस्थिति में वह अकेले थी मायके वालों ने सहारा देना भी चाहा। परन्तु उसने साफ इन्कार कर दिया। उसने एक स्कूल में नौकरी कर ली। अर्थाभाव के बीच बच्चों को पढ़ाने में लग गयी। अभावों के बीच बच्चे बड़े होने लगे। स्नेहा ने लॉ का भी कोर्स ज्वाइन कर लिया। लॉ की पढ़ाई कर उसने वकालत करनी शुरू कर दी। भगवान ने भी साथ दिया और वकालत चल पड़ी। धीरे-धीरे बच्चे भी बड़े होने लगे।

अचानक एक दिन स्नेहा को अपने पति की मृत्यु की खबर मिली। मगर वह थोड़ा भी विचलित नहीं हुई। परन्तु सामाजिक संस्कार को ध्यान में रख वह ससुराल पहुँच गयी। उसने खुद अपने पति के पैर नहीं छुये। मगर दोनों बच्चों के पैर स्पर्श करने को कहा। फिर वह वापस आ गयी।

धीरे-धीरे समय बीतता चला गया। अमन को एक अच्छी मल्टी नेशनल कम्पनी में नौकरी मिल गयी। संजय को मेडिकल कॉलेज में दाखिल मिल गया। घर में खुशियाँ वापस आने लगीं। परन्तु स्नेहा का तकिया रात को गीला हो जाया करता था, यह किसे मालूम था। उसका वतर्मान हमेशा बचपन में रहना चाहता, अपने पिता की यादों के साथ।

भोली-भाली, परन्तु दृढ़ इच्छा शक्तिवाली स्नेहा ने जिन्दगी की लड़ाई तो जीत ली परन्तु वह खुद से हार गयी। शरीर ने उसका साथ छोड़ना शुरू कर दिया। वह बीमार रहने लगी।

डाक्टर ने स्नेहा की नब्ब देखी। नब्ब इब रही थी। आँखें बंद थी। “पापा” एक हल्की सी आवाज हुई। अमन ने प्रकाश बाबू की तस्वीर स्नेहा के सामने रख दी।

“माँ, आँखें खोलो-अमन बोला।

स्नेहा ने धीरे से अपनी आँखें खोली। उसने पापा की तस्वीर देखी। फिर उसने अपनी आँखें बन्द कर ली। पापा की याद को समेटते हुए उसने अंतिम सांस ले ली।



उलझन

श्री त्रिलोचन कुमार घोष
लेखाकार

देखो आज दुर्दशा जिंदगी की।

उलझनों से ही उलझकर रह गई॥

बचपन का तो होश नहीं, जवानी भी मदहोश रही।

जिंदगी हुई प्रौढ़ जबसे, चिंताओं और फिकों से जकड़ गई।

सुलझाने की हर, क्योंकिर कोशिश में

उलझनों से ही उलझकर रह गई॥

कबायत की हमने हर क्षण गुलजार करने की।

यार, दोस्तों के साथ, जिंदगी दो चार करने की।

हँसते हुए ही, सांसें क्यों अटक गई।

सुलझाने की हर, क्योंकिर कोशिश में

उलझनों से ही उलझकर रह गई ॥

बेफ़िक मन को, न बाँधने की हर कोशिश की मैंने।

मगर चाहत भी दफन यहाँ, आखिर हो ही गई।

सुलझाने की हर क्योंकिर कोशिश में

उलझनों से ही उलझकर रह गई॥

दोशालों की फाँक से झाँकती जीवन की ये घड़ी

चंद पहरों के बाद, बुझने वाली ये लड़ी

वक्त से पहले ही, कफन में सिमट गई।

देखो आज दुर्दशा जिंदगी की

उलझनों से ही उलझकर रह गई॥



राष्ट्र-निर्माण में साहित्य

श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर'

किसी राष्ट्र के विकास एवं कल्याण में साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। मनुज की अन्य बहुल साधनाओं में साहित्य-साधना भी इस अर्थ में बहुत महत्व रखती है। राष्ट्र के विकास या विनाश को अत्यन्त सहजता से उस युग के साहित्य द्वारा जान लिया जा सकता है।

कहते हैं, साहित्य में लोकहित की भावना निहित रहती है। मानव कल्याण की अवचेतना रहती है। इसलिए साहित्य व्यक्ति की संकुचित भावना का उद्घाटन नहीं अपितु सामाजिक चेतना का उद्घोष है तथा राष्ट्र की संस्कृति के स्वरो का दिव्य राग है। इसी गौरव के सोपान पर चढ़कर वह विश्व-कल्याण की कामना से अनुरंजित हो उठता है। किन्तु, कल्याण-साधना के प्रारम्भिक चरण में वह समाज एवं राष्ट्र का विप्लव-राग होता है। कुरीतियों की छाती पर पौरुष का पद-प्रहार, कुण्ठा और अंधविश्वासों के जमे हुए पत्थर को तीव्र वेग से

तोड़ सकने की साधना एवं राष्ट्रीय संस्कृति के उन्नयन के लिए पौरुष के स्वरो का निनाद साहित्य की सहज वृत्ति होती है। राष्ट्र की छाया के नीचे समाज का पल्लवन होता है और साहित्यकार होता है उसकी एक इकाई। हममें से प्रत्येक का यह दायित्व है कि वह राष्ट्र के विकास के लिए अपने 'स्व' का विसर्जन कर दे, एक विराट प्रवाह को गति देने के लिए अपने स्वार्थ के घरोंदे से बाहर निकल आवे। सच पूछिये तो आदिम साम्यावस्था में साहित्य की सृष्टि इसी समूहवादी भावना से हुई। राष्ट्र की श्रृंखला को मजबूती एवं सौन्दर्य प्रदान करने का श्रेय इसलिए साहित्य को है। इसके अभाव में राष्ट्र का विकास संभव नहीं है। उसमें न तो वैचारिक क्षितिज की व्यापकता आ सकती है और न विकास के लिए प्रेरणा और गति ही प्राप्त हो सकती है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है-

अंधकार है वहाँ,
जहाँ आदित्य नहीं है,

मुर्दा है वह देश
जहाँ साहित्य नहीं है।

किसी ने सच ही कहा है -

“A great poet is the
most precious jewel of a nation.”

साहित्य समर्थ पुरुषों के हाथ में एक शक्ति है, उस शक्ति की साधना है जिसके द्वारा संग्रह के नव-निर्माण की अनेक समस्याएँ सुलझायी जा सकती हैं। परंतु राष्ट्र का साहित्यकार अपनी लेखनी से दासता के कुरूप अंधकार को दूर करने का प्रयत्न करता है। हम अपने ही देश का उदाहरण लें। सदियों की गुलामी के बन्धन को तोड़ने के लिए हमारे साहित्यकारों ने क्या नहीं किया? जब 1857 का सिपाही विद्रोह नृशंस अनाचार और आपसी फूट के चलते निष्प्राण और विफल हो गया तब से लेकर आजादी के मिलने तक हमारे लेखकों, कवियों ने विदेशियों के विरुद्ध देश के कोने कोने में अलख जगाने की चेष्टा की। भारतेन्दु की

कविताओं ने भारत की दुर्दशा का करुण चित्र उपस्थित किया, हमें हमारे बन्धनों से परिचित कराया, सोये हुए देश को झकझोर कर जगाया। हमारे सामने मोह का रेशमी फीता था जिसे झटक कर भारतेन्दु तथा उनके युग के अन्य कवियों ने तोड़ा।

“आबहुँ सब मिली के रोबहुँ
भारत भाई,

हा! हा! भारत दुर्दशा न देखि जाई”- का सामूहिक उद्बोधन भारतेन्दु ने ही भरा था। समकालीन कवियों ने अपनी सामर्थ्य भर उस स्वर को और भी व्यापक और प्रचंड बनाया। क्रांति की चिनगारियाँ यत्र-तत्र फूटने लगीं। चतुर्दिक राष्ट्रीय चेतना की किरणें फैलने लगीं। उस गतिशील परम्परा में श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी, मैथिली शरण गुप्त, बाल कृष्ण शर्मा, माखन लाल चतुर्वेदी, दिनकर इत्यादि कवि आये। उनकी कविताओं में क्रान्ति की मशाल थी, विद्रोह की लपटें थीं, जनता को जगाने का परुष उद्बोधन-राग था। जागरण का प्रभात निकट आने

लगा, दासूता का निविड़ अंधकार धीरे-धीरे दूर होने लगा। देश को जगाने में, उन्हे राष्ट्रीय साधना की सीख देने में तथा संघर्ष के लिए तत्पर बनाने में इन कवियों का अभूतपूर्व योगदान रहा है।

यदि हम अतीत की ओर दृष्टिपात करें तो हमें साहित्य के इस शुभ धर्म और कर्म के पुण्य का और भी कायल होना पड़ता है। एक युग था जब धर्म के नाम पर पाखंडों की भीड़ लग गई थी। धर्मान्धता के कट्टर पुजारी भोली-भाली जनता को ठगकर देश को सर्वनाश कर रहे थे, राष्ट्रीय संस्कृति की धज्जियाँ उड़ा रहे थे। अंधविश्वासों के कुरूप कुहर जाल में मानवता के विश्वासों को भरमा दिया गया था। नृशंस सत्ता निरीह प्राणियों के खून से होली खेल रही थी। उस अवसर पर साहित्यकारों ने मानवता के अमर स्वरो को फिर से अपनी काव्य वीणा पर झंकृत किया। धर्म के नाम पर स्वार्थ और घृणा का षडयंत्र रचने वालों के खिलाफ जमकर विद्रोह का बिगुल फूँका। कबीर की साखियों ने मानवतावादी विश्वासों

को वाणी दी, लोक जीवन को सतर्क किया, जन-जागरण का शंख फूँका तथा देश अपनी प्राचीन संस्कृति के मणिमय तत्वों को फिर से प्राप्त करने के पथ पर गतिशील हो उठा। यह विजय साहित्य की थी, साहित्यकारों की थी। उस युग में साहित्यकारों ने सिद्ध कर दिया कि राष्ट्र के पुनर्निर्माण में साहित्य का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है।

साहित्य हमें बतलाता है कि मनुष्य का विश्वास एक है, उसकी तरल भावना का घोष एक है, उसकी धड़कन और सपने एक हैं। साहित्य ने भावात्मक एकता के जरिए राष्ट्र-निर्माण की एक बहुत बड़ी समस्या का समाधान प्रस्तुत किया है। साहित्य में मानव-हृदय की तरंगें होती हैं, बुद्धि की कटुता नहीं, अपनापन का चिर-परिचित राग होता है, अलगाव और कट्टरता की राजनीति नहीं होती। राष्ट्र के निर्माण एवं विकास में भावात्मक एकता का एक जबर्दस्त सेतु होता है साहित्य। साहित्य अन्य प्रकार से भी राष्ट्र-निर्माण में अपना सार्थक

सहयोग देता है। वह अतीत के विस्मृत आदर्शों का पुनर्मूल्यांकन करता है तथा उसी के अनुरूप अभिनव स्वप्नों को गढ़ने में सहायक भी होता है। अतीत उसके लिए हेय और उपेक्षा की वस्तु नहीं। साहित्य सांस्कृतिक परम्परा के दिव्य स्वरों की अभ्यर्थना करता है ताकि उसके आलोक में हम अपने वर्तमान का समुचित मूल्यांकन कर सकें। वह इतिहास के आशावाद से हमें परिचित कराता है, उदात्त संस्कृति के पवित्र आलोक से राष्ट्र के प्रांगण को आलोकित करता है, जन-जीवन में विश्वास और जागृति का अमन्द दीपक जला देता है तथा वर्तमान के उपचार की प्रेरणा देता है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि साहित्य मात्र राष्ट्र के गौरवपूर्ण अतीत का दिव्य स्तुति गान ही नहीं, मात्र वर्तमान की सरल-वक्र रेखा का जीवंत चित्र ही नहीं, अपितु भविष्य के स्वप्नों का सक्षम चितेरा भी होता है। उसके स्वर मिटते नहीं, उसके विश्वास बासी नहीं होते, उसकी प्रेरणा का तूफान थमता नहीं क्योंकि वह सनातन

मानव के अश्रु-हास की सच्ची गाथा है। तभी तो सत्साहित्यकार एक ही साथ वर्तमान की सूक्ष्म दृष्टि, अपने सांस्कृतिक अतीत की परम्परा का पुष्प और भविष्य की आशाओं का बीज बना रहता है। सुख-दुःख का अभिन्न सहचर बनकर, अभिव्यक्ति के विधान में साहित्य व्यक्ति का साथी बना रहता है। संकट में सांत्वना, विपत्ति में धैर्य, समस्याओं के कुहासे में समाधान का आलोक, अभ्युत्थान में विनय, सुषुप्ति में जागृति का मंत्रोच्चार तथा अकर्मण्यता में सक्रियता का तूफान बनकर सत्साहित्य समाज को नवजीवन एवं नई स्फूर्ति सौंपता है और राष्ट्र-निर्माण में गति प्रदान करते रहता है। अतः साहित्य राष्ट्र की वह निधि है जिसे दुर्व्यवस्था और अनीति के कुचक्र समाप्त नहीं कर सकते, ग्रीष्म का प्रचंड बवण्डर झुलसा नहीं सकता। उसके अपने व्रत-साधना नियम हैं जो परिवर्तित होते हुए सामाजिक वातावरण के साथ-साथ गतिशील होते रहते हैं।



नशाबंदी

श्री वशिष्ठ कुमार हेम्बरम
स० ले० अधिकारी

तुनक कर

नेताजी की पत्नी ने कहा-

आम-सभाओं में देते हो

‘नशाखोरी बन्द करो’ का नारा

और अपने कमरे में

शराब की बोतलें लाकर देते हो

दरवाजा बन्द करने का इशारा!

मुस्कुराकर

उत्तर दिया नेता जी ने-

स्वयं शंकर ने गरल का पान किया

देवताओं की भलाई के लिए,

क्यों नहीं हम, नशा का पान करेंगे

‘जनता’ की भलाई के लिए।



दहेज प्रथा

सुश्री गरिमा सिन्हा

द्वारा श्री शशिभूषण प्रसाद

व० ले० अधिकारी

थी तैयारियाँ जोरों से उस लड़की की शादी की,
खबर न थी उसको आने वाली बर्बादी की।
बारात आई धूम धड़ाके के संग,
जाते हुए बिखरा गई खून के रंग।

दूल्हे के पिता ने फरमाइशें बढ़ा दीं
लड़की वालों ने भी दहेज पूर्ति को जान लड़ा दी।
पर बदकिस्मती कि वे माँगे कर न पाए पूरी,
बारातियों ने लौटने की दे दी मंजूरी।

दुल्हन के पिता को लगा सदमा गहरा,
बाराती न रुके, फेंका दूल्हे का शेहरा।
दुल्हन बेचारी भी यह सब देख न पाई,
जान देकर की उसने भरपाई।

मुझे यह बताओ क्या यह सही है,
दहेज का मतलब यह तो नहीं है।
शादी ब्याह है क्या कागज की कश्ती,
लड़कियों की जानें हैं इतनी सस्ती?



सिंहस्य कुंभ उज्जैन

श्री राम सुभग राम
से० नि० व० लेखाकार

मैं दिनांक 2.5.2004 के 12.30 बजे रात्रि में उज्जैन पहुँचा। स्टेशन से उतरकर यात्रियों के साथ पैदल चलते हुए गंगा शिप्रा नदी के घाट पर 3.00 बजे सुबह पहुँचा। स्नान करने के बाद “महाकाल मंदिर” के दर्शन हेतु चला। आधा किलो मीटर की दूरी दो घंटे में तय करते हुए मैंने मंदिर में प्रवेश किया एवं महाकाल के दर्शन किये। मंदिर की बनावट भी गजब है। प्रत्येक मोड़ पर श्रद्धालुओं के दर्शन हेतु टी० भी० लगा हुआ है। आंगन में रंगीन फव्वारा, मंदिर की शोभा में चार चाँद लगा देता है। दर्शन के पश्चात् उज्जैन में एक दो रोज ठहरने के विचार से अनेक होटल, धर्मशाला एवं प्राइवेट घरों का भ्रमण किया। धर्मशालाओं के गेट पर “हाउस फुल, कल दोपहर तक सम्पर्क करें” का बोर्ड टंगा पाया। हरसिद्धि

एवं महाकाल के क्षेत्र में मकान, होटल और लॉज में बदला पाया। एक मामूली कमरा के लिए, एक दिन के लिए हजार रुपये से ढाई हजार रुपया माँगा जा रहा था। ढाई हजार रुपये का रोड पर चावल दाल, सब्जी का एक भी होटल नहीं पाया। प्रत्येक रोड श्रद्धालुओं से खचा-खच भरा पाया।

1. उज्जैन में गंगा शिप्रा -

उज्जैन में गंगा शिप्रा का दृश्य देखने योग्य एवं अत्यंत मनमोहक है। छोटी-छोटी पहाड़ियों के बीच नदी की धारा पश्चिम से पूरब की ओर है। नदी के दोनों किनारों पर करीब तीन किलो मीटर में सिढ़ीनुमा घाट बना हुआ है। घाट के ऊपर करीब 100 फीट चौड़ा रोड दोनों किनारे पर बना हुआ है जो यात्रियों के स्नान करने, कपड़े बदलने, इधर से उधर जाने

में सहायक है। दोनों किनारे पर छोटे- छोटे असंख्य मंदिर हैं। इस पार से उस पार जाने के लिए तीन पीपा पुल बना हुआ है। नदी के बीच में पाँच फल्लारें हैं जो श्रद्धालुओं के लिए अत्यंत मनमोहक हैं एक मंदिर के ऊपर विशाल अमृत कुंभ (अमृत का घड़ा) बना हुआ है।

2. साधु- संतों के भंडारे में नमाज- सिंहस्थ में इस दृश्य को देखने के लिए संतों एवं श्रद्धालुओं की अच्छी भीड़ देखने को मिली। यह अनूठी घटना महानिर्वासी अखाड़ा के महामंडलेश्वर स्वामी विश्वेश्वर नन्द जी महाराज के शिविर में हुई। अखाड़े में महाराज जी की ओर से भंडारा था और इसी में मुस्लिम भाई भी आमंत्रित किये गये थे। मौलाना हिफ्जुर रहमान की अगुआई में पचास से ज्यादा मुस्लिम भाई अपने पारम्परिक लिबास पहने पहुँचे। स्वामी जी आदर सहित

उन्हे शिविर में ले गये और चर्चा का दौर शुरू हुआ। दोनों पक्षों ने धर्म के नाम पर लड़ाने वाले राजनेताओं को कोसा और जनता से धर्म का मर्म समझने की अपील की। सभी ने साथ में भोजन किया और संतों के भंडारे के बीच सभी मुस्लिम भाइयों ने शिविर में दोपहर की नमाज अदा की।

3. सिंहस्थ में राहत प्रदान किया तारबूज :-

चिलचिलाती धूप में भूख और प्यास मिटाने का एक मात्र विकल्प तारबूज और ककड़ी रहा। वर्ष की सिल्ली पर रखे तारबूज से यात्रियों की कीमत पाँच रुपये प्लेट थी।

4. छोटी उम्र का बड़ा संयम :-

मथुरा से अपने गुरु के साथ आई सुश्री निर्वाणी पंकज दास मात्र दस वर्ष में ही साध्वी बनी। इतनी कम उम्र में मन को संयमित करना सचमुच आश्चर्य की बात है। वे कहती हैं कि मित्र मंडली

नहीं है तो क्या हुआ संत-मंडली तो है।

5. पैसा नहीं पुण्य कमाया :-

मंगलनाथ क्षेत्र में जबलपुर से आये श्री सचिन शर्मा “पारद शिवलिंग” के व्यापारी ने बतलाया कि वे अपने व्यवसाय से बहुत खुश हैं। बिक्री हो या न हो कोई फर्क नहीं पड़ता। यहाँ पूरे भारत एवं विदेशों से भी लोग आ रहे हैं। उनसे बहुत सी बातें सीखने को मिलती हैं। यह सिंहस्थ उन्हें पाठशाला से भी अच्छी जगह लग रहा है। उन्हें यहाँ तीन लाभ (धन लाभ, धर्म लाभ एवं आनन्द लाभ) हो रहा है, जो हजारों रुपये खर्च करने पर भी नहीं मिलता। एक अंग्रेज ग्राहक को 900/- (नौ सौ रुपये) की मूर्ति मात्र 550/- (पाँच सौ पचास) रुपये में दे दी, जबकि उसका वास्तविक मूल्य 600/- छः सौ रुपये था। वे बोले कि पैसा ही सब कुछ नहीं होता। जब विदेशी मुल्क के लोग हिन्दू धर्म के इस पर्व को महान् समझकर सम्मिलित हो रहे हैं तो हमारा भी फर्ज है कि हम अपनत्व भाव से उनका सम्मान करें। पारद शिवलिंग के रहस्य के बारे में उन्होंने बतलाया

कि ‘प’ विष्णु, ‘आ’ कालिका, ‘र’ शिव एवं ‘द’ ब्रह्मा हैं। इनके दर्शन मात्र से हजारों अश्वमेध एवं हजारों गायों के दान करने का फल मिलता है।

6. बाबा की कमाई का आधार चिल्लर देना - बाबा गोबिन्द प्रसाद उम्र 30 वर्ष, गोरखपुर, उत्तरप्रदेश ने बताया कि उनका काम मंदिरों में बैठकर चिल्लर देना है। श्रद्धालुओं को मंदिर में दर्शन करने के बाद, दानपेटी में चढ़ाने के लिए खुल्ले पैसे की आवश्यकता होती है। ऐसे में पाँच दस, पचास एवं सौ रुपये के नोटों को बदलना उनके लिए समस्या हो जाती है। आस-पास की दुकानों में भटकने के बाद भी उन्हें खुल्ले पैसे नहीं मिल पाते इसलिए यात्रियों की सुविधा के लिए मैं यह कार्य करता हूँ। एक दुर्घटना में अपना बाँया पैर गँवा चुके बाबा, भीख माँगने को अपने स्वाभिमान के खिलाफ मानते हैं। वे बोले कि विकलांगता के बाद घरवालों ने उन्हें साथ रखना उचित नहीं समझा इसलिए जिल्लतभरी जिन्दगी जीने के बजाय घर छोड़ दिया। तब से पेट पालने के लिए चिल्लर देने

का कार्य कर रहा हूँ। सिंहस्थ कुंभ में वे दस हजार रुपये का चिल्लर (अठन्नी, चवन्नी, एक रुपया, दो रुपया तथा पाँच रुपये का) लेकर गोरखपुर से आये हैं। स्नान वाले दिनों में लगभग 100-125 रुपये की कमाई हुई थी जबकि अन्य दिनों में 60-70 रुपया।

बाबा नोट लेते हैं
चिल्लर देते हैं

5 रुपया 4=50

10 रुपया 9=00

50 रुपया 45=00

100 रुपया 90=00

7. भिखारियों का सिंहस्थ कुंभ भिखारियों के लिए स्वर्ग से कम नहीं होता। कारण कि भोजन की कोई चिन्ता नहीं। किसी भी अन्न क्षेत्र (भंडारा) में दोनों शाम भरपेट भोजन मिला जाता है। साथ ही साथ दान से प्राप्त रकम से हमेशा जेब भारी रहती है। मेला क्षेत्र खासकर महाकाल, रामघाट, दत्त अखाड़ा और मंगलानाथ में सबसे ज्यादा भिखारी नजर आये। इनलोगो के दान प्राप्त करने का तरीका कठिन नहीं तो आसान भी नहीं था। शारीरिक एवं बनावटी लाचारी

का इन लोगों ने खूब प्रदर्शन किया। उनकी मजबूरी एवं बेवसी देख हर कोई पसीजकर दान देने के लिए हाथ बढ़ा देता था। पर नजदीक से देखने पर उनकी वास्तविकता सामने आती है। आडम्बर दिखाकर भीख मांगने वालो की कमी नहीं थी। काँटो पर सोना, चारो ओर अग्नि जला कर लेटे रहना, सिर को गर्दन तक जमीन में दफन कर शीर्षासन करना हाथ- पैर पर पट्टियाँ बाँध लेना इत्यादि नौटंकी से दान अर्जित करने वाले बहुत भिखमंगे नजर आये।

मैंने भारत के उत्तर से दक्षिण, पूरब से पश्चिम, अनेक महानगरों एवं तीर्थ स्थलों के दर्शन किये पर सिंहस्थ कुंभ-उज्जैन जैसी भीड़ कहीं नहीं देखी। इतनी भीड़ के बाद भी कोई अप्रिय घटना नहीं सुनी। सचमुच में लोगो का कहना है कि -

अकाल मृत्यु वो मरे,
जो कर्म करे चांडाल का।

काल उसका क्या करे,
जो भक्त हो महाकाल का॥



तुम

श्री कृष्ण मुरारी जयपुरियार,
लेखाकार

इस जीवन का सार हो तुम।

कुछ सीधी, कुछ व्यक्त साधना,

कुछ गूँगी, कुछ अव्यक्त भावना।

इन सबका आकार हो तुम॥

तेरी कामना ही मेरा जीवन।

मेरा ये सर्वस्व समर्पण,

मैं अर्पण तुझपर,

तू मेरा दर्पण॥

अन्तर्मन से मुखरित सुरमयी

वीणा की झंकार हो तुम॥

तुम्ही भाव हो, तुम्ही भावना,

तुम्ही साध्य हो, तुम्ही साधना।

तुम्हारी कामना ही मेरा आराधना॥

मैं भूल गया हूँ,
सपनों में खोना,
क्योंकि मेरे अब हर सपनों में हो तुम।

मैं भूल गया हूँ,
अपने इस कवि मन को बहलाना,
क्योंकि मेरी हर कविता में हो तुम।

मैं भूल गया हूँ,
अपने हृदय का स्पन्दन,
क्योंकि मेरी हर साँस, हर धड़कन हो तुम॥

इस पूरे जीवन का मेरे ,
सच, सारा सम्मान हो तुम॥



स्वामी विवेकानन्द और उनके सपनों का भारत

श्री राजू कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखाकार

जिस समय भारत गुलामी की जंजीरो से जकड़ा हुआ बड़ी ही विवशतापूर्वक अपना धर्म, अपनी शिक्षा, सभ्यता, संस्कृति तथा आध्यात्मिक बल खोता जा रहा था, ठीक उसी समय भारत के आध्यात्मिक, सामाजिक एवं धार्मिक मंच पर एक ऐसे सितारे का अभ्युदय हुआ, जिसने भारत को भूमि के धरातल से उठाकर आसमान की बुलंदियों पर अवस्थित करा दिया। इस सितारे ने श्री रामकृष्ण परमहंसदेव के मंगलमय आशीर्वाद को शिरोधार्य कर इस उन्मार्गगामी परानुकरणमोह से आच्छन्न, आत्म-विस्मृत जाति के बीच खड़े होकर अद्वैतवाद की गंभीर गर्जना से सनातन धर्म का पुनः उदघोष किया; जिनका अपूर्व ज्ञान, तपः सम्भूत अमित तेज की उज्ज्वल प्रभा को विकीर्ण कर दस वर्षों तक मध्याह्न सूर्य की तरह समस्त जगत को किरणोन्मत्त करता रहा; जिनकी अक्लान्त चेष्टा तथा निर्भीक आत्मोत्सर्ग से भारत के एक गौरवमय भविष्य का सूत्रपात हुआ—केवल भारत ही क्यों—जो अखिल विश्व की कल्याण-कामना से महान युगादर्श को जीवन-मूर्त बनाकर अवतीर्ण हुए थे; उस सितारे के ज्ञान एवं विद्वता के संबंध में हावर्ड विश्वविद्यालय के विख्यात प्रोफेसर जे०एच० राइट ने लिखा था— 'स्वामी से उनका परिचय पूछना सूर्य से उसके चमकने के अधिकार के बारे में पूछने के समान है।' यह सितारा और कोई नहीं स्वामी विवेकानन्द ही हैं।

व्यक्तित्व निर्माण

12 जनवरी 1863 ई० को अवतरित रामकृष्ण परमहंसदेव के यह शिष्य गुरु के आदेशों को पाकर- “तुम वटवृक्ष बनोगे, तुम्हारे ऊपर हजारों पंछी अपना घोंसला तैयार करेंगे” संन्यास मार्ग के कठिन साधना पथ पर अग्रसर हुए और उनके इस आदेश को चरितार्थ करते हुए मानव कल्याण में लीन स्वामीजी 4 जुलाई 1902 ई० को 40 वर्ष की अवस्था में सदा के लिए निर्विकल्प समाधि में लीन हो गए। स्वामी जी के पिता का नाम विश्वनाथदत्त तथा माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था। पिता विश्वनाथदत्त वकालत करते थे तथा वे बड़े ही अध्ययनशील थे। अंग्रेजी, फारसी साहित्य इत्यादि पढ़ने के कारण उनमें धार्मिक कट्टरता नहीं थी। विवेकानन्द की माता पति सौभाग्यगर्विता भुवनेश्वरी देवी प्राचीन हिन्दू पंथी महिला थीं। उनके तेजस्वी चरित्र में शील-सौजन्य का ऐसा सुन्दर मेल था कि पड़ोसी स्त्रियों

को भी श्रद्धा से आकर्षित कर लेती थीं।

स्वामीजी के बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। बचपन में वे बड़े ही नटखट थे। जब उनके ऊधम से परेशान हो बहनें उन्हें मारने दौड़ती तो चट नाली में उतरकर कीचड़ लगाकर खड़े हो जाते। अपवित्र होने के भय से बहनें लौट जातीं तो शुचि-अशुचि ज्ञानहीन बालक ताली पीटते हुए कहने लगता- पकड़ो न मुझे। कोचवान की भाँति छाती फुलाकर बैठना, तेज घोड़े की लगाम खींच हाँकनेवाले कौशल, जरीदार पगड़ी आदि बातों का नरेन्द्र पर विशेष प्रभाव था। नरेन्द्र से यदि पूछा जाता कि तू बड़ा होकर क्या बनेगा; तो कहते ‘कोचवान बनूँगा।’

नरेन्द्र की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। प्राथमिक शिक्षा समाप्त कर वे मेट्रोपोलिटन इंस्टिट्यूशन में भेज दिए गए। प्रवेशिका का दो वर्ष का पाठ्यक्रम एक ही वर्ष में समाप्त कर नरेन्द्र

ने ही प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो स्कूल के गौरव की रक्षा की थी। उनके युवावस्था में कोई भी ऐसा न था जो उनकी तीक्ष्ण दृष्टिपूर्ण नेत्रद्वय और पौरुषदीप्त स्निग्ध सौन्दर्यमय मुखमण्डल से प्रभावित न हुआ। इस प्रकार उनका बाल्य जीवन यद्यपि अलौकिक नहीं तथापि विशिष्टतापूर्ण अवश्य था। प्रवेशिका परीक्षा उत्तीर्णकर प्रेसीडेन्सी कॉलेज में प्रवेश पाने के बाद उन्होंने स्नातक की पढ़ाई पूरी की थी। एक बार कॉलेज की 'आलोचना-सभा' में दिए गए उनके दार्शनिक मतों से संतुष्ट होकर उनके विद्वान प्राचार्य हेस्टी ने इनके संबंध में कहा था—'वह दर्शनशास्त्र का बेजोड़ छात्र है। जर्मनी और इंग्लैण्ड के किसी भी विश्वविद्यालय में उसके जैसा मेधावी छात्र नहीं है।'

नरेन्द्र के मित्र सुरेन्द्रनाथ ने एक दिन आनन्दोत्सव का आयोजन किया उत्सव में श्री रामकृष्ण परमहंस देव को आमंत्रित किया गया था। अच्छा गायक न मिलने

कारण सुरेन्द्रनाथ ने गाने के लिए नरेन्द्र को ही बुलाया। रामकृष्णदेव नरेन्द्रनाथ का गाना सुनकर काफी प्रभावित हुए। यही 1880 में नरेन्द्र एवं परमहंस देव जी का प्रथम परिचय था। विदा होते समय देव जी ने नरेन्द्र से दक्षिणेश्वर आने का अनुरोध किया। दूसरों की किसी बात पर विश्वास कर लेना नरेन्द्र के स्वभाव के विरुद्ध था। इसी भाव के कारण वे युवावस्था में दार्शनिकत्व से तश्वत न होकर सत्य की प्राप्ति के लिए साधना में प्रवृत्त हुए थे। इसी कारण दक्षिणेश्वर जाने पर उन्होंने गुरुदेव रामकृष्ण की परीक्षा लेने की ठानी। उन्होंने गुरुदेव से प्रश्न किया— "महाराज, क्या आपने ईश्वर के दर्शन किए हैं?" गुरुदेव ने बिना देर किए जवाब दिया— "हाँ बेटा किया है; ठीक उसी तरह जैसे मैं तुम्हें देख रहा हूँ। यदि तुम भी उसे देखना चाहते हो तो मेरे कहे अनुसार चलो मैं तुम्हें दिखा दूँगा।"

एक दिन एक कार्यक्रम के

सिलसिले में नरेन्द्र किसी मित्र के यहाँ गए हुए थे। हास-परिहास में संलग्न नरेन्द्र को एक व्यक्ति ने आकर खबर दी कि उनके पिता की हृदयगति रुक गई है-----। फिर क्या था, उनका दृढ़ हृदय विचलित हो गया-शोक से अधीर हो अश्रु बहाने लगे। उनके पिता धन तो यथेष्ट कमाते थे पर मुक्तहस्त होने के कारण कुछ भी बचा नहीं पाते थे। सांसारिक बातों से उदासीन नरेन्द्र दारिद्र्य के कठोर आघात से चौंक उठे। प्रचुरता के मध्य पले भाई-बहनों को रोटी के लिए तरसते देख विचलित से हो गए। सम्पत्ति के समय जो लोग मित्र थे, चिरकाल के नियमानुसार किनारा काट गए। संसार की कृतधनता का विभत्स रूप देखकर उनका चित्त द्रोही हो उठा। नौकरी की तलाश में वे कोलकाता की सड़कों पर नंगे पाँव घूमते रहे। इस स्थिति का वर्णन उन्होंने अपनी कृति 'मेरा जीवन तथा ध्येय' में किया है - 'सूखी रोटियाँ तीस-तीस दिन के

लिए संग्रह करके रख ली जातीं। फिर रोटियाँ ऐसी कड़ी हो जातीं कि पानी में भिगो-भिगोकर खाना पड़ता, लेकिन फिर भी ऐसी कि खाने पर मुँह से लहू बहने लगता-सच कहता हूँ, ऐसी रोटी से आप दाँत तोड़ सकते हैं। इसी बीच एक अपने ही आदमी ने उन्हें घर से बाहर करने के लिए मुकदमा चला दिया। परन्तु सौभाग्यवश मुकदमें में उनकी जीत हुई। वास्तव में उनकी इस स्थिति का अंदाजा वे ही लोग लगा सकते हैं जिन्हे किशोर यौवन के मध्य पितृहीन खाली हाथों पारिवारिक भरण-पोषण का उत्तरदायित्व कंधे पर लेकर जीवन संग्राम में अग्रसर होना पड़ा हो।

आर्थिक स्थिति सुधरते न देखकर नरेन्द्र ने सोचा- 'श्री रामकृष्ण की कृपा से ही सुधार हो सकता है।' ऐसा सोचकर वे दक्षिणेश्वर चले आए और गुरुदेव को अपनी दशा बतलायी। गुरु ने कहा-“माँ की कृपा बिना कुछ नहीं होगा।

आज मंगलवार है, जो कुछ माँ काली से माँगोगे वही पाओगे।' नरेन्द्र काली की प्रतिमा के सामने सब भूल गए और कह बैठे - "माँ ! विवेक दो, वैराग्य दो, ज्ञान दो, भक्ति दो। माता तुम्हारी कृपा से मैं सदा तुम्हें ही देख सकूँ।" जब मन्दिर से बाहर निकले तब याद आया, पर अब क्या हो सकता था ? गुरु ने कहा- " जब माँग न सका तो सांसारिक सुख तेरे भाग्य में नहीं। फिर भी रोटी और मोटे वस्त्र की कमी नहीं होगी।" नरेन्द्र अटर्नी ऑफिस में काम करके आजीविका चलाने लगे परन्तु बाद में विद्यासागर स्कूल में अध्यापन कार्य पर लग गए।

जिस कुशलता के साथ अदृश्य रूप से श्री रामकृष्ण ने स्वामी विवेकानन्द का निर्माण किया उसका वर्णन असंभव-सा है। आश्चर्यमय थे त्यागी-कुल-शिरोमणि नरेन्द्र और उससे अधिक आश्चर्यजनक थे उनके गुरुदेव।

गले के रोग के कारण जब श्री रामकृष्ण को कलकत्ते के काशीपुर में इलाज के लिए रखा गया था उस समय अगस्त 1885 ई० में नरेन्द्रनाथ अध्ययन कार्य छोड़कर तथा घर त्यागकर वहीं रहने लगे। चिकित्सा के बावजूद उनका रोग प्रबल होने लगा। एक दिन रामकृष्ण ने अपने शिष्य नरेन्द्र को संन्यास देने का संकल्प लिया। शुभ दिन में शिष्य के हाथों गेरुआ वस्त्र देकर कहा- " क्या तुम भिक्षा की झोली कंधे पर डालकर राजपथों पर भिक्षा माँग सकोगे ?" कोटि -कोटि प्राणियों में जो देवता पुकार रहा था, नरेन्द्र उसकी उपेक्षा कैसे करते ? बस, उसी समय भिक्षा माँगने निकल पड़े; जो कुछ मिला पहले गुरुदेव के सामने रखकर बाद में प्रसाद रूप में ग्रहण किया। भिक्षा और उच्च गौरव बुद्धि वाले युवक संन्यासी का तपः सम्भूत वैराग्य देखकर गुरुदेव विभोर हो गए।

संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् अब नरेन्द्र मानव जाति के युग प्रवर्तक संन्यासी विवेकानन्द होगए। परिवारी नरेन्द्र अब सारी पश्चवी का पुजारी हो गया। तीव्र अनुराग देखकर श्री रामकृष्ण ने एक दिन विवेकानन्द को बुलाकर कहा- 'साधना करते समय मुझे अष्ट सिद्धियाँ मिली थीं उन्हे तू ले ले, संसार की कोई भी इच्छा अपूर्ण नहीं रहेंगी। परन्तु विवेकानन्द ने इन सिद्धियों को यह जानकर अस्वीकार कर दिया कि इनसे सत्य की प्राप्ति में सहायता नहीं मिलेगी। अतः विवेकानन्द उन साधुओं में नहीं जो -नारी मुई घर सम्पत्ति नासी तो माथ मुड़ाये भए संन्यासी।

15 अगस्त 1886 ई0 में गुरुदेव की मृत्यु के बाद उन्होंने सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया। सर्वप्रथम उन्होंने बिहार का यथेष्ट भ्रमण किया। इसके बाद आगरा, काशी, अयोध्या, वृन्दावन, ऋषिकेश, बद्रीनाथ, केदारनाथ, जयपुर, अहमदाबाद, जूनागढ़, मैसूर, त्रिवेन्द्रम, मद्रास, कन्याकुमारी आदि

स्थानों का भ्रमण किया। इस क्रम में उनकी मुलाकात अखण्डानन्द, पवहारी बाबा आदि से हुई। इस भ्रमण से उन्हें काफी अनुभव प्राप्त हुआ। उन्होंने देखा कि धर्म के प्रति श्रद्धा की कोई कमी नहीं है, परन्तु सामाजिक जीवन में गतिशीलता नहीं है। दोष धर्म का नहीं, धर्म की आड़ में धर्म का व्यवसाय करने वाले पण्डे तथा पुजारियों का है। विभिन्न सम्प्रदायों तथा जाति विभागों ने धर्म को खोखला कर दिया है। यदि भारतवासियों में अखण्ड ज्योति प्रज्वलित करनी है तो अनुचित संस्कारों के विरुद्ध समाज की सुख-सुविधाओं को तिलांजलि देनी होगी। यहीं उन्हें विदेश जाने की भी प्रेरणा मिली। उन्होंने निश्चय किया- मैं समुद्र लौंघकर करोड़ों पीड़ितों के लिए प्रतिनिधि बनकर विदेशो में जाऊँगा और अर्थोपार्जन करके मातृभूमि लौँँगा। शेष जीवन स्वदेश उन्नति में अर्पण कर दूँगा अन्यथा इसी चेष्टा में प्राण दे दूँगा।

विदेशों में विवेकानन्द

2 नवम्बर 1893 को होनेवाले विश्वधर्म सम्मेलन में भाग लेने के लिए विवेकानन्द बम्बई से अमेरिका के लिए रवाना हुए। कोलंबो, सिंगापुर, हांगकांग, टोकियो होते हुए स्वामीजी बैकूवर पहुँचे। यहाँ से कनाडा होते हुए तीन दिन में रेल द्वारा शिकागो पहुँचे। रास्ते में एक वृद्धा महिला से स्वामी जी का परिचय हो गया और वह स्वामीजी को अपने घर ले गयी। उसके घर पर ही उनकी मुलाकात प्रो० जे० एच० राइट से हुई जिसकी मदद से उन्हें विश्व धर्म सम्मेलन में हिन्दू प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार किया गया। सभा में करीब सात आठ हजार लोग थे। स्वामी जी ने उपस्थित जनता को - “अमेरिकावासी भगिनी एवं भातृगण” से संबोधित किया। लगभग दो मिनट तक तालियाँ बजती रहीं। इसके बाद उन्होंने शून्य पर व्याख्यान प्रस्तुत कर विश्व में यह सिद्ध कर दिया कि विश्व का कोई भी महान् कार्य भारतीय कर सकते हैं और

बौद्धिक, धार्मिक, चारित्रिक, आध्यात्मिक तथा दार्शनिक क्षेत्र में भारत जितना उन्नत है उतना विश्व में और कोई देश नहीं।

इस संदर्भ में अमेरिका के समकालीन सुप्रसिद्ध पत्र ‘न्यूयार्क हेरल्ड’ ने उनके संबंध में लिखा था- “शिकागो धर्म सम्मेलन में विवेकानन्द ही सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति हैं। उनका भाषण सुनकर ऐसा लगता है कि धर्म मार्ग में इस प्रकार के समुन्नत राष्ट्र (भारतवर्ष) में हमारे धर्म प्रचारकों को भेजना निर्बुद्धि मात्र है।” 5 अप्रैल 1894 ई० में ‘वोस्टर इवनिंग ट्रान्सक्रिप्ट’ ने तो यहाँ तक अपना मंतव्य प्रकट किया था- ‘वस्तुतः वे हमारे अधिकांश विद्वानों की तुलना में महान-भद्र, विश्वासी और विद्वान - व्यक्ति हैं।

इसके बाद वे इंग्लैण्ड गये जहाँ वेदान्त सोसाइटी की स्थापना की। कुमारी भगिनी निवेदिता ने इसी समय स्वामीजी का शिष्यत्व ग्रहण किया। साथ-ही-साथ उन्होंने फ्रांस जर्मनी, सीलोन में हिन्दू धर्म

की गहराइयों को स्थापित किया। वे सोने की भी हों तो उन्हें तोड़ स्वदेश लौटने पर उन्होंने कलकत्ते डालो क्योंकि गुलाम गुलाम ही में रामकृष्ण मिशन तथा बेलूर होता है चाहे उसको आदर मिले मठ की स्थापना की। या कोई की मार पड़े। आपसी घृणा, संघर्ष, ऊँच-नीच की भावना को त्यागकर प्रेम की ज्योति जलाओ।'

भारत की प्रति

स्वामी विवेकानन्द ने व्यक्ति, समाज, धर्म, राष्ट्रीयता इत्यादि को नवपरिभाषित किया, साथ- ही- साथ उन्होंने युवाओं की राष्ट्रभक्ति तथा देशप्रेम को नयी दिशा दी। उन्होंने जीवन के रहस्यों को इस प्रकार सुलझे हुए विचारों में व्यक्त किया जिसके द्वारा सारी मानवता युगों-युगों तक लाभान्वित होती रहेगी। हम उनकी प्रगतिशील भावनाओं को निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत सँजो सकते हैं-

1. राष्ट्रीय आन्दोलन को नयी दिशा -स्वामी जी के हिन्दुत्व पुनर्जागरण एवं आध्यात्मिक विचारों ने राष्ट्रीय आन्दोलन को एक विचित्र गति एवं नवीन दिशा प्रदान की। उन्होंने भारतीयों को संबोधित करते हुए कहा-‘गुलामी की जंजीरो को जिनसे तुम्हारे पैर कसे हुए हैं यदि

स्वामी जी की ओजपूर्ण वाणी ने भारतीय जनता एवं राष्ट्रवादियों में एक विद्युत-शक्ति का संचार किया, जिसके फलस्वरूप वे अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाकर गुलामी की जंजीर तोड़ने के लिए प्रयत्नशील हो गए जिसकी परिणति अन्ततोगत्वा 1947 ई० में स्वतंत्र भारत के रूप में हुई। भारतीयों के आत्म-विश्वास को प्रबल बनाने के लिए एवं राष्ट्रीय आन्दोलन को एक नई दिशा प्रदान करने के लिए उन्होंने बड़े ही ओजपूर्ण शब्दों में ललकारा - “संसार का इतिहास उन थोड़े से व्यक्तियों का इतिहास है जिनमें आत्मविश्वास था। यह विश्वास अंतः स्थित देवत्व को ललकार कर प्रकट कर देता है। तब व्यक्ति कुछ भी कर सकता

है। असफलता तभी मिलती है जब तुम अन्तस्थ अमोघ शक्ति को अभिव्यक्त करने का यथेष्ट प्रयत्न नहीं करते। जिस क्षण राष्ट्र या व्यक्ति आत्मविश्वास खो देता है, उसी क्षण उसकी मृत्यु हो जाती है।” वस्तुतः विवेकानन्द स्वतंत्र और खुशहाल भारत देखना चाहते थे।

2. सामाजिक अवधारणा - विवेकानन्द भारतीयों की आपसी कलहप्रियता, स्वार्थपरता और ईर्ष्या को मिटा देना चाहते थे। वे चाहते थे कि हमारा समाज धरती माँ की भाँति सर्वसहिष्णु बने क्योंकि ऐसा होने से सारी दुनिया को परास्त किया जा सकता है। उन्होंने एकता एवं अखण्डता पर काफी बल दिया। उन्होंने देश में व्याप्त छुआछूत तथा अन्य सामाजिक विषमताओं को मिटाते हुए कहा- “तुम गर्व से चिल्लाकर कहो कि हम सभी भारतवासी हैं। भूखे भारतवासी, मूर्ख भारतवासी, चमार भारतवासी, चांडाल भारतवासी सभी हमारे भाई हैं। चिल्लाकर कहो कि

तुम सच्चे वैदांती हो।” वे भारतवासियों में आत्मविश्वास भरना चाहते थे क्योंकि आत्मविश्वास ही प्रगति का मार्गदर्शक है। भारतीयों की हीन भावना को मिटाते हुए उन्होंने कहा- “यह न सोचो कि तुम दरिद्र हो, तुम्हारा कोई साथी नहीं है। अरे क्या कभी किसी ने पैसे को मनुष्य बनाते देखा है? सदैव मनुष्य ही पैसा बनाता है। यह सारी दुनिया तो मनुष्य की शक्ति से, उत्साह के बल से, श्रद्धा के बल से ही बनी है।”

3. धार्मिक विचार - विवेकानन्द ने हिन्दू धर्म में व्याप्त सभी प्रकार के कुसंस्कारों को दूर कर उसे उसके सच्चे स्वरूप में प्रतिष्ठित किया। उन्होंने धर्म का तादात्म्य नैतिकता से किया और लोगों को बताया कि व्यक्ति में धार्मिक बल तभी आ सकता है जब उसमें चारित्रिक बल हो और चरित्र के गठन के लिए सभी प्रकार के कुसंस्कारों का परित्याग करना होगा, अहिंसक और सदाचारी बनना होगा।

स्वामीजी के अनुसार धर्म वह वस्तु है जिससे पशु मनुष्य तक और मनुष्य परमात्मा तक उठ सकता है। दूसरे शब्दों में, जो कुछ प्रगति के मार्ग में रोड़े अटकाता है वही अधर्म है और जो कुछ हमारे ऊपर उठने तथा द्वन्द्वरहित होने में सहायक होता है वही धर्म है। एक अवसर पर उन्होंने कहा था- “ धर्म का रहस्य आचरण से जाना जाता है व्यर्थ के मतवादों से नहीं। भला बनना तथा भलाई करना इसमें ही समग्र धर्म निहित है।” आज हमारे देश में धर्म को लेकर बहुत बड़ा विवाद खड़ा हो रहा है। परन्तु इस संबंध में भी स्वामी जी की बातों का यदि अनुकरण किया जाए तो उनके विचार सुलझे हुए हैं- “ धर्म को लेकर कभी विवाद न करो। धर्म संबंधी सारे विवाद और झगड़े केवल यही दर्शाते हैं कि वहाँ आध्यात्मिकता का अभाव है। धर्म-संबंधी झगड़े सदैव खोखली और असार बातों पर ही होते हैं। जब पवित्रता, आध्यात्मिकता आत्मा को छोड़कर चली जाती है तभी शुष्क झगड़े -विवाद आरंभ होते हैं,

उसके पूर्व नहीं।”

स्वामी जी एक बहुत बड़े कर्मयोगी थे। उन्होंने व्यक्ति को कर्म का ही मार्ग प्रशस्त करने का उपदेश दिया। धर्म में सारतत्त्व के रूप में उन्होंने कहा था - “व्यक्ति का सबसे बड़ा धर्म उसका अपना कर्म है जो अनासक्ति तथा त्याग पर आधारित होना चाहिए।” इस प्रकार स्वामी जी का धर्म हमारे चतुर्दिक विकास में सहायक है।

4. युवको के प्रेरणास्रोत - स्वामी जी के विचारों ने भारतीय नवयुवको को काफी प्रभावित किया। उन्होंने नवयुवको की आवश्यकता को महसूस करते हुए कहा- “आवश्यकता है वीर्यवान, तेजस्वी, श्रद्धा -सम्पन्न और दृढ़ -विश्वासी निष्कपट नवयुवको की और ऐसे सौ मिल जाएँ तो संसार का कायाकल्प हो जाए।” स्वामी जी को नवयुवकों की शक्ति में काफी विश्वास था और वह स्वयं भी तरुण संन्यासी थे। उन्होंने युवको से कहा - “ आज हमें जिसकी

आवश्यकता है , वह है -लोहे की मांसपेशियाँ और फौलाद के स्नायु जिसमें वज्र के उपादानों से गठित मन का वास हो। अब और रोने की आवश्यकता नहीं हैं। अपने पैरों पर खड़े हो जाओ और मर्द बनो। नीतिपरायण बनो, साहसी बनो, धुन के पक्के बनो- तुम्हारे नैतिक चरित्र में कहीं ६ 188 ताक न हो, मृत्यु से भी मुठभेड़ लेने की हिम्मत रखो।” स्वामी जी के इन वचनों ने युवाशक्ति को वह प्रेरणा दी कि फिर भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का आधा इतिहास युवाओं के बलिदान के खून से लिखा गया।

स्वामी जी की राष्ट्रभक्ति एवं देशप्रेम ने सोए हुए भारतीय नवयुवकों की राष्ट्रीय भावना को झकझोर दिया। परिणामतः वे सिंहनाद करते हुए देश को स्वतंत्र कराना ही अपना मुख्य धर्म समझने लगे। स्वयं सिंहपुरुष सुभाषचन्द्र बोस ने कहा था - “ देशभक्ति की प्रेरणा हमें स्वामी जी से ही प्राप्त हुई है।” इस

तरह भारतीय नवयुवकों में राष्ट्रीय चेतना जागृत कर उन्हें बौद्धिक दृष्टिकोण से उन्नत करने का श्रेय स्वामी विवेकानन्द को ही है। वे चाहते थे कि भारत के नवयुवक कर्तव्यनिष्ठ, चरित्रवान, आत्मविश्वासी तथा साहसी हों तभी हमारा विकास संभव होगा।

5. शैक्षणिक विचार- स्वामीजी के मतानुसार जिस संयम द्वारा इच्छाशक्ति या प्रवाह और विकास वश में लाया जाता है और फलदायक होता है वह शिक्षा कहलाती है। उनका कहना था कि शिक्षा का अर्थ यह नहीं है कि तुम्हारे दिमाग में ऐसी- ऐसी बातें ढूँस दी जाएँ कि अन्तर्द्वन्द्व होने लगे और तुम्हारा दिमाग जीवनभर उन्हें पचा न सके । जिस शिक्षा द्वारा हम अपना जीवन - निर्माण कर सकें, मनुष्य बन सकें, वही वास्तविक शिक्षा है। हमारा प्रयोजन उसी शिक्षा से है जिसके द्वारा चरित्र का गठन हो, मन का बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य स्वावलम्बी हो सके।

नारी शिक्षा के संबंध में उनके विचार बहुत ही स्पष्ट एवं सटीक थे। उनका कहना है कि मातृरूपा नारी हमारी उन्नति एवं प्रगति का माध्यम है। उसको अशिक्षित रखना समाज को अशिक्षित रखना है। वस्तुतः स्वामी जी सार्वभौम शिक्षा के पक्षधर थे। उनके विचार में संसार में एक भी अशिक्षित व्यक्ति नहीं रहना चाहिए।

शिक्षकों के संबंध में उनका कहना था - “ भारतीय शिक्षा की किसी समस्या को हल करने के लिए सर्वप्रथम शिक्षक को नित्य प्रति के सामान्य कार्य का अनुभव होना आवश्यक है और इसके लिए शिक्षार्थी की आँखों से संसार की ओर -चाहे वह क्षण भर के लिए क्यों न हो - देखते रहना, सबसे कड़ा और वांछनीय गुण है।”

पृथ्वी के विशाल प्रांगण में ऐसे महावृक्ष का उदय सदियों बाद ही होता है, जो समाज के

विकास की गति को नयी दिशा देकर एक नवीन जीवन प्रदान करता है। जब मनुष्य, मानवता से भटककर राक्षसता का मार्ग ग्रहण कर लेता है तब ऐसे युग अवतारी पुरुष का जन्म होता है जो समाज को अपनी वाणी द्वारा नवीन पथ दर्शाते हैं। स्वामी जी ने अपना सर्वस्व मानवता को ही दिया।

यह सत्य है कि आज स्वामी जी शारीरिक रूप से हमारे बीच नहीं हैं फिर भी अपने विचारों के रूप में वे हमारे बीच जीवित हैं। आज यदि हमारे देश के लोग खासकर युवावर्ग स्वामीजी के केवल एक अग्रलिखित कथन पर अग्रसर होत्रे का संकल्प कर लें तो न सिर्फ हमारे देश का अपितु सम्पूर्ण विश्व का कल्याण उतना ही निश्चित है जितना कि सूर्य का पूर्व में उदित होना-

“ उठो, जागो और तब तक

मत रुको जब तक तुम अपने लक्ष्य को प्राप्त न कर लो।”



कल, आज और कल

श्री लतेश कुमार
लेखक

ऐ स्वदेशवासियों, आँखों में बसा लो उन सबको
जिसने मुक्त किया था पिंजरबद्ध से हम सबको।

जब छा रहा था मुल्क में अधिरा,
हर तरफ था निराशाओं का बसेरा
न जाने क्यों, खफा था सबेरा।

तब आग दहक पड़ा हरेक नौजवानों में,
खो गए वे दीवाने आजादी पाने में,
नजारा था चारों ओर नदियाँ लहू की,
सूनी तक हो गयी मांग, मासूम कलियाँ की।
कहीं लिख रहा था रक्त की स्याही से इतिहास,
कहीं खेल रहा गोलियों से होली,
आज जमीं पे नहीं थे नौजवानों की टेली।
आखिर में हुआ फिरंगियों को एहसास,
फिर करेंगे न ऐसा दुस्साहस।

कहते हैं, जन्म लेते नहीं बारम्बार ऐसी हस्ती,
मिलते नहीं बार-बार तूफानों से किस्ती,
तो फिर आज,
हम क्यों लें रहे हैं सुस्ती।

आयी नयी सदियों
धूमिल हुई वो वादियाँ
पन्नों में सिमट गयी वो तस्वीर
बादलों में छुप गयी वो तकदीर।

क्या ये समां, क्या वो फिजां,
वो दरमियां है जैसे,
ये जमीं वो आसमां।

बदल ली हमने अपनी राह,
बदल गयी हमारी -तुम्हारी चाह,
पर, बदली नहीं कलमों की स्याही।

कहती है, अब वो पलछिन कौन करें याद
आया जवां दिलों का राज,
तनिक फुरसत नहीं है आज,
खुद के लिए जीता मरता है समाज
एक -दूजे से छीना करता है ताज
चाहे गर्त में जाये स्वराज।

कहता है, गुजरता वक्त
छोड़ो कल और आज की बात,
कब किसका रहा है साथ,
हर क्षण देता है एक नवीन रूप,
कभी छांव तो कभी धूप।
यही है जीवन का स्वरूप।



बिहार की पहचान

श्री हरे राम प्रधान

वरिष्ठ लेखाकार

दिल्ली घूमने का शौक बहुत पहुँच गये। एक दिन तक हमलोगों दिनों से मन में पाल रखा था, ने गाड़ी एवं रास्ते की थकान दूर परन्तु समय के अभाव एवं व्यस्तता की। दूसरे दिन साले के साथ के कारण जा नहीं पाता था। बहुत दिल्ली घूमने का प्रोग्राम तय हुआ। दिनों की प्रतीक्षा के बाद दिल्ली हमलोग बस स्टैण्ड पहुँचे और बस जाने का मौका मिला। मेरे एक की प्रतीक्षा करने लगे तभी एक साले साहब दिल्ली में रहते हैं। बस आई और देखते - ही - देखते छोटा साला भी दिल्ली में पढ़ता चली गई। हमलोग बस पर चढ़ था। एक बार वह छुट्टी के समय नहीं सके। बस पर नहीं चढ़ने का पटना आया था तथा वापसी में कारण मैं था। मेरा साला तो बस उसने मुझे भी दिल्ली चलने के पर चढ़ गया, पर मैं नहीं चढ़ लिए प्रेरित किया। मैं भी तैयार सका, क्योंकि मेरे आगे चार-पाँच हो गया। अब लगा कि दिल्ली महिलाएँ थीं। उन सबको पार करना घूमने एवं दिल्ली को देखने का मुझे अच्छा नहीं लगा और दूसरी समय आ गया। बस भी छूट गई। इस तरह चार पाँच बसें चली गई और हमलोग बस स्टैण्ड पर ही खड़े रह गये। यह सब देखकर मेरा साला थोड़ा

हम अपने छोटे साले के साथ दिल्ली के लिए रवाना हो गये। दूसरे दिन हमलोग दिल्ली

नाराज हुआ और बोला कि यह दिल्ली है बिहार नहीं। यहाँ आप देखते ही रह जाओगे और औरत आपको धक्का देकर बस में चढ़कर अपने गंतव्य स्थान पर चली जायेगी, इसलिए थोड़ी हिम्मत करके आप बस में सवार होने की कोशिश कीजिये। उसकी बातों पर गौर कर मैंने हिम्मत जुटायी और औरतों से धक्का खाता किसी तरह बस में चढ़ गया।

बस के अन्दर का नजारा कुछ और ही था। मर्द औरत को और औरत मर्द को धक्का देकर साथ-साथ बैठ रहे थे। मैं यह सब देखकर आश्चर्यचकित था। दो सीट वाले पर एक सीट पर एक युवती बैठी थी, बगल में मैं खड़ा था। मेरा साला मुझसे कह रहा था कि बैठ जाइये, पर मैं युवती के बगल में बैठने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। मैं आगे की तरफ देख रहा था। तभी मुझे लगा कि मेरा हाथ कोई पकड़कर खिंच रहा है। देखा कि बगल की सीट पर बैठी

युवती मेरा हाथ पकड़कर आदेश की मुद्रा में मुझको झिड़की देते हुए बोली, बैठ जाओ, सीट खाली है, खड़े क्यों हो और अपने बगल में बैठ लिया। मेरा तो हाल बेहाल था। अनजान युवती के बगल में इतना सटकर पहली बार बैठा था। जब मैं बैठ गया तो युवती मुझसे पूछ बैठी आप बिहार से आये हो क्या? बिहारी हो? मैंने कहा, जी हाँ मैं बिहारी हूँ पटना से आया हूँ। मैं भी हिम्मत जुटाकर उस युवती से पूछ बैठा, क्या बिहारी होना गुनाह है, बिहार के लोग अच्छे नहीं होते। नहीं, नहीं ऐसी बात नहीं है, उस युवती ने आगे कहा जैसे ही मैंने देखा कि सीट खाली है और आप खड़े हो बैठने की कोशिश नहीं कर रहे हो तभी मैं समझ गई कि यह आदमी बिहारी ही हो सकता है, क्योंकि औरत के प्रति ऐसी श्रद्धा बिहारी में ही होती है। मैं दिल्ली में पिछले बीस वर्षों से रहती हूँ। बसों से आने जाने के वक्त अन्य प्रान्तों

के लोगों से भी मुलाकात होती थी। इसलिए मैं तमाम बिहारियों है, परन्तु ऐसी भावना अन्य प्रान्त को यह संदेश देना चाहता हूँ कि के लोगों में कम पाई जाती है जहाँ भी जाओ अपने बिहारी होने और यह कहते -कहते वह महिला का अहसास दिलाते रहो। अपने अपनी मंजिल के नजदीक पहुँचते को किसी से कम न समझो और ही उतर कर चली गई। औरत के यहाँ की सभ्यता और संस्कृति को जाने के बाद मेरे मन में विचार कहीं और कभी मत भूलो। अपने आया कि क्यों लोग बिहारियों का बिहार का नाम रौशन करो और मजाक उड़ाते हैं, जबकि उस महिला बिहार की पहचान बनाये रखो। में बिहारियों के प्रति कितनी श्रद्धा



इन्साफ यहाँ पर रोता है

श्री रामाधार राय
वरिष्ठ लेखाकार

देखो! वह कैसा मदारी
कौन-कौन खेल दिखाता है ?
केन्द्र की सत्ता छोड़ दिया,
मुम्बई पर जी ललचाता है।
सत्ता -त्याग की बात करे
और रोड शो दिखलाता है।
भक्त देश है इनका
पर देशभक्त कहलाता है ॥
इन्साफ यहाँ पर रोता है।
भूठ कपट की 'शार्पनिंग पर
फीलगुड कहवाता है।
'हाई टेक 'की बात करे,
पर कृषक भूखे मरता है।

सियाचीन पर जाता है,
और मुर्दे की कफन को खाता है।
चारा-चोरी पर कुर्त्ता फाड़े,
रक्षा सौदे में डील सजाता है ॥
इन्साफ यहाँ पर रोता है।

जे० पी० की विरासत पर जंग लगे
मूर्ति पर माला चढ़ता है।
नेहरू, सावरकर का नाम रटे,
काम विरप्पन का करता है।
अपहरण का ताना बाना बुनकर,
सत्यवादी बन जाता है।
गाँधीवाद की हत्या कर,
गाँधीवादी कहलाता है ॥

इन्साफ यहाँ पर रोता है।
बाढ़, भूचाल की राहत हेतु,
भारी बवाल मचाता है।
लेता राहत पैतीस सौ करोड़ का ,
पैतीस करोड़ पहुँचाता है।
चुनाव के महासंग्राम में,
साड़ी, बार्डक लुटवाता है।
राजनीति में मूल्य कहाँ ?
पर नेता महान् कहलाता है।
इन्साफ यहाँ पर रोता है।
शांति, शांति चिल्लाता है,
पर महा अशांति फैलाता है।
नेता जी चुनाव हार गये,
पर जीत का पंचम फहराता है।
दागी-दागी चिल्लाता है,
सदन अपने -आप पर रोता है।
लोकतंत्र की बात कहूँ क्या ?
रुग्ण काया पर आँसू बहाता है।।
इन्साफ यहाँ पर रोता है।



यात्रा वृत्तान्त

श्री शिव दयाल सिंह,

स० ले० अधिकारी

एक समय की बात है। अच्छी फसल दिखाई दे रही थी। सौभाग्य से मुझे पंजाब के एक कहीं-कहीं धान की कटनी की जा सीमावर्ती स्थान फिरोजपुर जाने चुकी थी पर पौधों का एक फीट का मौका लगा था। वह स्थान का निचला हिस्सा अभी खेतों में पाकिस्तान सीमा रेखा से मात्र ही खड़ा था। ऐसा प्रतीत होता था दस-किलोमीटर दूर है। बिहार राज्य जैसे ट्रैक्टर उस खेत में घुमाया से उस स्थान तक जाने में बीच गया हो। एक स्थान पर देखा कि रास्ते में लुधियाना शहर के भी ट्रैक्टर जैसा ही दस फीट ऊँचा एवं दर्शन होते हैं। लुधियाना एक पन्द्रह फीट लम्बा एक मशीन है औद्योगिक क्षेत्र है। वहाँ बहुत से जो धान की कटनी कर रहा था। कल-कारखाने नजर आते हैं। पौधे क ऊपर के कटे अंश से वह साथ ही साथ लुधियाना रेलवे धान भी उसी समय अलग करते स्टेशन के बगल में करीब तीन जा रहा था एवं पुआल पीछे गिराते बिगहा जमीन पर ईट की दीवार जा रहा था। समय-समय पर वह के घेरे के अन्दर मोर पक्षी भी इस इक्छे होते धान के दानों को दीखते हैं। उनमें से कुछ उड़- दूसरे खड़े ट्रैक्टर के डाला में विछायी उड़कर ईट की दीवार पर चढ़ गयी चादर पर डाल देता था। मोटे जाया करते थे। ईट की दिवार कपड़े की वह चादर इतना बड़ी थी इतनी उँची नहीं थी कि कोई उन्हे कि वह ट्रैक्टर के डाला के बाहर चुरा न सके। खेतों में धान की भी लटक रही थी। बड़े-बड़े मशीनो

द्वारा धान की कटनी बड़े बड़े किसान विलम्ब से जायेगी। इसके चलते ही करा सकते हैं। बिहार राज्य में यात्रियों को होनेवाली असुविधा के शायद ही यह देखने को मिले। हाँ, लिए खेद है। मैंने टिकट जल्दी बिहार राज्य में भेड़ों के झुण्ड को -जल्दी लिया था जल्दी लौटने के चराते देखा जा सकता है पर बकरो लिए। अतः उतनी देर तक रुकना के झुण्ड को नहीं। परन्तु पंजाब असहनीय हो रहा था। मैंने तत्काल राज्य में बकड़ों के झुण्ड को भी खुलने वाली एक सवारी गाड़ी में आप चराते देख सकते हैं। इनमें स्थान ले लिया। सवारी गाड़ी को बकरे और बकरियाँ दोनों थी। इनकी सात बजे संध्या में खुलकर मोगा उँचाई भेड़ों की उँचाई से भी अधि शहर होते हुए फिरोजपुर से एक थी। लुधियाना शहर को ग्यारह बजे रात में पहुँचना था। फिरोजपुर सवारी गाड़ी का ओरिजिनेटिंग स्टेशन होने के कारण सभी डिब्बे खाली थे। डिब्बे बिजली की रोशनी से काफी प्रकाशित थे। सभी डिब्बे एक दूसरे से जुड़े हुए थे। चलती गाड़ी में भी एक डिब्बे के यात्री को अन्दर ही अन्दर दूसरे डिब्बे में जाना आसान था। मैंने एक अच्छा-सा गद्दीदार नया सीट देखकर दाहिनी तरफ खिड़की के पास स्थान ग्रहण कर लिया था। दाहिनी तरफ बैठने के कारण सामने से आने वाली गाड़ियाँ बगल से गुजरती हुई आसानी से दिख रही थी। अगल-बगल की सीटों पर सभी

मैं जिस गाड़ी के सहारे पंजाब पहुँचा था उस गाड़ी का नाम गंगा-सतलज एक्सप्रेस था। गंगा बिहार की नदी है एवं सतलज पंजाब की। फिरोजपुर शहर से उस गाड़ी के लौटने का समय संध्या में छः बजे के करीब था। मैंने समय से टिकट खरीद ली थी। अब गाड़ी की प्रतीक्षा कर रहा था। समय काटने के लिए कभी किताब की दूकान पर तो कभी चाय की दूकान पर खड़ा हो रहा था। इतने में स्टेशन के लाउडस्पीकर से आवाज आने लगी कि गंगा सतलज एक्सप्रेस अपने निर्धारित समय से मेन्टीनेन्स कारणों के चलते साढ़े छः घण्टे

जगह पंजाबी भाषा-भाषियों ने स्थान ग्रहण कर लिया था। एक ने पंजाबी भाषा बोलते हुए मुझसे कलम की मांग की। मैंने भाषा तो नहीं समझी पर इशारा को समझते हुए उन्हें कलम दे डाली। उसने कुछ लिखा फिर कलम वापस कर दी। डिब्बे की बनावट ऐसी थी कि डिब्बे के किसी स्थान पर खड़ा एक साधारण कद का आदमी उस डिब्बे के सभी अन्य यात्रियों को देख सकता था। कुछ यात्रियों के पूरे शरीर न देखे जा सकें पर सीर तो आसानी से देखे जा सकते थे। मेरे नजदीक में बैठने वाले अधिकतर यात्री बुजुर्ग थे। वे एक दूसरे से गप्पे लगा रहे थे। उनकी भाषा मुझे कर्ण-प्रिय थी। सीट ऐसे थे कि एक सीट पर तीन आदमी आसानी से बैठ सकते थे। मेरे सामने की सीट पर भी तीन व्यक्ति थे। इसी प्रकार सामने मगर दूर की सीट पर छः यात्री थे। वे छः यात्री अपनी यात्रा खाने-पीने गप्पे करने से प्रारम्भ किये। उनके हाथों में खाने-पीने की बोतलें भी दिख रही थी। उन बोतलों के पेय पदार्थ को लेने से आदमी नशा में आ जाता है। सभी लम्बे-लम्बे कद के आदमी थे पर जवानी के मुख्य क्षण से वे गुजर चुके थे। गाड़ी आगे बढ़ती गई और यात्री धीरे-धीरे कम होते रहे। रास्ते में गाड़ी रुकने पर चढ़ने वालों से उतरने वालों की संख्या अधिक थी। क्योंकि रात होती जा रही थी। जब मेरे आस-पास यात्रियों की संख्या बहुत कम हो गई तब मैंने देखा कि एक पंजाबी नवयुवक अपने मोबाइल फोन पर बातें करने में मशगूल हैं। वह पीछे की सीट पर भी उसी मोबाइल फोन पर व्यस्त देखा जा रहा था। पता नहीं वह कहाँ से एवं किससे अपनी भाषा में बातें कर रहा था। उसके साथ उससे कम उम्र के कुछ युवक भी थे जो कभी भी स्थिर जगह पर बैठ नहीं पाते थे। कभी इस सीट पर तो कभी उस सीट पर। कभी इस डिब्बे में तो कभी उस डिब्बे में। किसी की भी उम्र तीस साल से ज्यादा की न थी। वे सभी एक साथ लुधियाना शहर तक गये। फोन पर बातें करने वाला वह युवक अधिकतर एक ही सीट पर अधिक समय तक रहा था।

हालांकि उसने भी कभी -कभी सीट बदला।

अब तक रात के करीब दस बज चुके थे। मैं अपनी सीट पर खिड़की के पास अकेले जगा पड़ा था। गाड़ी अपनी आधी से अधिक दूरी तय कर चुकी थी। मेरी गाड़ी खड़ी- खड़ी किसी अन्य एक्सप्रेस गाड़ी के आने की प्रतीक्षा कर रही थी। डिब्बे में मैं अपने को अकेला महसूस नहीं कर रहा था क्योंकि कुछ अन्य यात्रियों के वार्तालाप सुने जा रहे थे। गाड़ी में जगह इतनी थी कि दूर की सीट पर एक बूढ़ा आदमी सोया पड़ा था। उसके फैले लम्बे पैर दूसरे को आने जाने में कठिनाई पैदाकर रहे थे। मेरे सामने या बगल में कोई न था। तभी पंजाबी वेश-भूषा का एक युवक मेरे पास आया। वह मेरे जैसा ही शर्ट-पैन्ट पहना था पर जूते बिना मोजे के पश्चिमी भारत की सम्यता के सूचक थे। सामने से आने वाली एक्सप्रेस गाड़ी दूसरे ट्रैक पर आकर खड़ी हो चुकी थी। उस युवक की उम्र तीस-चालीस वर्ष के मध्य थी। वह मेरे शरीर के पास सटा जा रहा

था पर वह मुझे कुछ नहीं कर रहा था। मैं मात्र इतना अनुभव कर रहा था कि वह लम्बा होते जा रहा है। क्यों लम्बा हो रहा था यह अज्ञात था। यह भी अनुभव हुआ कि वह झुककर पिछे की सीट पर मेरी ओर से होकर कुछ कर रहा था। लगा इधर-उधर बैठने वाले लड़कों का वह दोस्त है। वह उनसे कुछ हँसी-मजाक कर रहा है। मैं स्थिर था। सोंचा निहत्था है अर्थात् बिना अस्त्र-शस्त्र के है एवं मुकाबले में हार जाने लायक है। एकाएक “फट ” की आवाज आई। वह एक कदम पीछे हटा। अब वह मेरे शरीर से विलग हो गया था। मैंने देखा उसके हाथ में एक भूरा रंग का 10 से.मी.X15 से. मी. का लिफाफा आ गया था। ऐसा लगा उसने अपने दोस्त का लिफाफा ले लिया एवं मजाक कर रहा है। पर उसके दोस्त की तुरन्त आवाज न सुनने के कारण मैंने समझा कि वह तो चोर है। इसे आसानी से पकड़ा जा सकता है। पर जिसका माल उसके हाथ लगा था उसके तरफ से कोई कदम उठता न देख मैं चुप था यदि किसी ने कहा

होता कि “चोर ”, “पकड़िये” तो पकड़ने का उत्साह बढ़ जाता और मैं उसे आसानी से धर दबोचता। जिस समय “फट” की आवाज आई थी उस समय धीरे-धीरे चलने वाली बगल की ट्रेन से एक यात्री ने गुहार लगाई थी, “भाई साहब आपका पर्स ले गया”। बाद में मैं समझा कि भाई साहब नींद में थे उन्हें कुछ भी पता नहीं कि उनका पर्स किधर गया था। एक कदम पीछे हटने वाला वह चोर गुहार की आवाज पर हिला तक नहीं। आराम से शर्ट का ऊपरी बटन खोला, जेब में लिफाफा को डाला। फिर बटन बन्द किया एवं पास के दरवाजे से नीचे उतरते हुए बढ़ती हुई दूसरी गाड़ी में सवार हो गया। गुहार लगाने वाले आदमी का डिब्बा आगे निकल चुका था। एक अन्य पंजाबी महिला ने दूसरे यात्री की गुहार को सुना था एवं उसने उस चोर को भागते भी देखा था पर नींद ले रहे उस युवक को तुरन्त जगाने की हिम्मत नहीं जुटा पाई थी। मैं जगाने या सूचना देने के लिए अपनी तरफ से हिला तक नहीं

क्योंकि चोर की पूरी कार्रवाई मेरी ओर से ही चली थी। मैं डर रहा था कि कोई गलतफहमी यह न कह दे कि मैं तो उसका सहयोगी था। ऐसा होने पर अशुभ हो जाने का संदेह था। महिला का शोर सुनकर सोया युवक जगा एवं दौड़ा हुआ दरवाजे तक गया। धीरे-धीरे बहुत सारे लोग स्थिति का जायजा लेने पहुँचे पर वे क्या कर सकते थे? अधिक आदमियों की भीड़ को देखकर अब मन का डर समाप्त हो चला था। मैं भी खड़ा होकर पीछे की तरफ देखा दो महिलायें एवं दो पुरुष गमगीन थे। एक महिला के शरीर पर काफी गहने थे पर उसके गहने सुरक्षित थे। वे सभी पंजाबी थे। हाल-चाल पूछने वालों में एक सशस्त्र सेना का जवान मात्र थोड़ी हिन्दी बोला था। थोड़ी देर बाद सान्त्वना देते हुए सभी अपने-अपने सीटों पर लौट गए।

इस घटना के देखने के उपरांत यह अनुभव हुआ कि चोरी कर लेना भी एक कला है। परन्तु इस कला में निपुण एवं पारंगत होने

से अच्छे लोग डरते हैं। ऐसा सुना जाता है कि कला एक अच्छी चीज होती है। पंजाबी चोर इस कला में इतना निपुण था कि वह यह जानता था कि किस समय पर पर्स को खींच लेना चाहिए। पर्स उस समय खींचना चाहिए जिस समय आस-पास कम भीड़ लगी हो। भीड़ को भी भाप लीजिए कि जो लोग अगल-बगल में बैठे हैं अथवा खड़े हैं उन्हें उसकी गतिविधि से अनजान रहना है।

पर्स वैसे समय में खींचे जा सकते हैं जिस समय एक रेलगाड़ी ने धीरे-धीरे चलना प्रारंभ कर दिया हो। सम्भावना ऐसी भी लगती है कि एक युवक जो मोबाइल फोन पर हरदम बातें करता जा रहा था वह पर्स वाले युवक की गतिविधि से वास्तविक चोर को अवगत करा रहा हो। मामला जो भी हो एक आदमी हर कला में दक्ष नहीं हो सकता है। हमें अपनी पसंद की कला ही चुननी चाहिए।

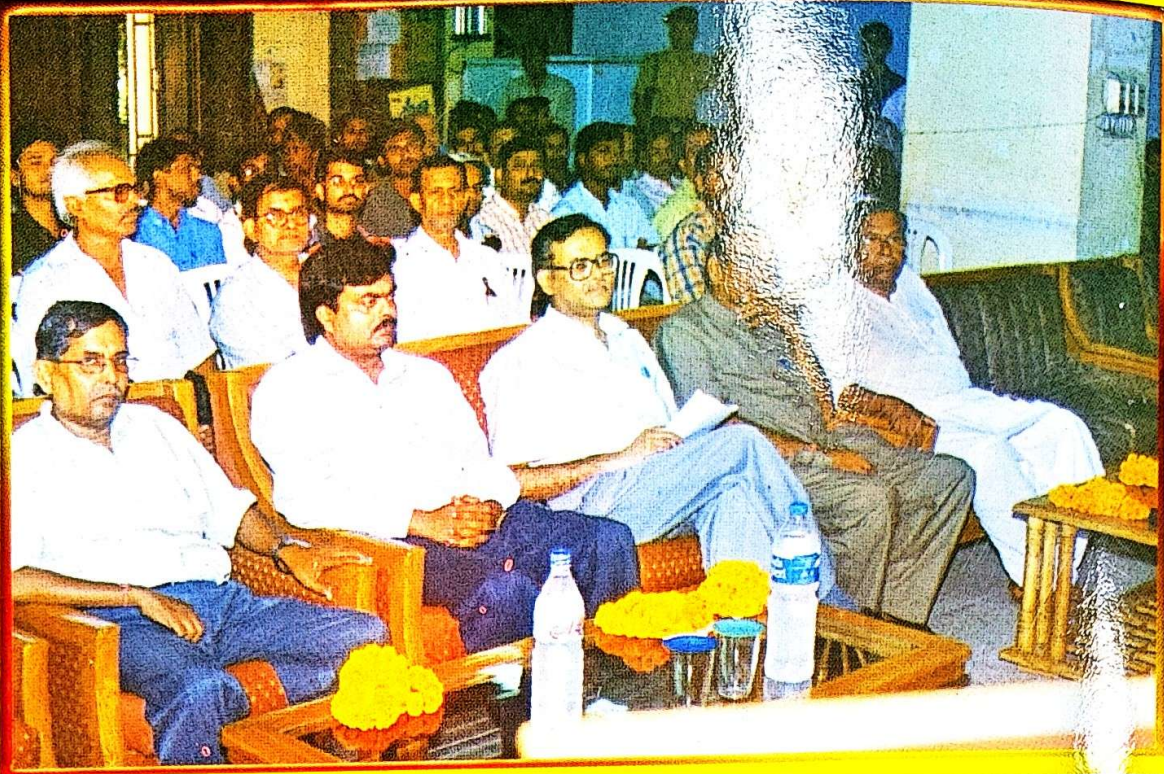




हिन्दी पखवारा समारोह, 2004 में आयोजित कवि गोष्ठी में भाग लेते हुए कवि-वृन्द एवं श्रोतागण ।



‘आवासीय परिसर’ के शिलान्यास के लिए पधारे भारत के माननीय नियंत्रक-महालेखापरीक्षक श्री विजयेन्द्र नाथ कौल के साथ अधिकारिवृन्द ।



हिन्दी पखवारा समारोह, 2004 में हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कवि-गोष्ठी एवं अन्य कार्यक्रम का आनन्द लेते हुए माननीय महालेखाकार श्री राकेश कुमार वर्मा, अतिथिगण, अधिकारीगण एवं कर्मचारिवृन्द।



कार्यालय की हिन्दी पत्रिका का लोकार्पण करते हुए हिन्दी के प्रसिद्ध कवि श्री राम उपदेश सिंह के साथ महालेखाकार, बिहार, पटना श्री राकेश कुं0 वर्मा।